

S.S. Traders
Suppliers in : All kinds of Door Fittings Modular Kitchen & Accessories, etc.
D. Neog Path, Near Dona Planet ABC, G.S. Road, Guwahati - 05
97079-99344

विकसित भारत समाचार

राष्ट्र निर्माण में प्रयत्नशील

वर्ष : 10 | अंक : 278 | गुवाहाटी | गुरुवार, 9 मई, 2024 | मूल्य : 10 रुपए | पृष्ठ : 8 | VIKSIT BHARAT SAMACHAR | Regd. RNI No. ASSHIN/2014/56526

कन्नोज वालों सुन्नत को जिताना, मैं इसे बड़ा आदमी बनाने वाला हूँ : अमित शाह

पेज 2

रकीबुल हुसैन के हारने पर पद त्याग करेगे प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष

पेज 3

एनडीए सरकार ने गरीबों, किसानों, युवाओं और महिलाओं की प्रगति-सशक्तिकरण...

पेज 5

विश्व कप क्वालिफायर के संभावितों की सूची में फुटबॉलर झींगन बाहर

पेज 7

SHARMA HARDWARE
Sharma Gali, SJ Road Athgaon, Guwahati-01
98648-02947

सुप्रभात
निम्न अनुष्ठानों (भूमि, धन-व्यापारउद्योग-धर्मों) से आय के साधन भी बढ़ते हैं।
- आचार्य चाणक्य

न्यूज गैलरी
एस्ट्रोजेनेका ने दुनिया भर से कोविशील्ड वैक्सिन वापस मंगवाई

नई दिल्ली (हि.स.)। एस्ट्रोजेनेका ने दुनिया भर से अपनी कोरोना वैक्सिन कोविशील्ड को वापस मंगवाई है। साथ ही कोविशील्ड की खरीद-बिक्री पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है। एस्ट्रोजेनेका ने साल 2020 में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के साथ मिलकर कोरोना वैक्सिन बनाई थी। इसके फार्मूले का इस्तेमाल करते हुए सीएम इंस्टीट्यूट ने भारत में कोविशील्ड नाम से वैक्सिन बनाई थी। एस्ट्रोजेनेका ने कुछ दिनों पहले ही कोविशील्ड के कुछ साइड इफेक्ट्स की बात स्वीकार की है। एस्ट्रोजेनेका ने मंगलवार को जारी बयान में कहा कि बाजार में जरूरत से ज्यादा वैक्सिन उपलब्ध है। इसलिए कंपनी ने बाजार से सभी टोके वापस मंगवाने का -शेष पृष्ठ दो पर

उत्तराखंड : 10 वन दारोगा-आरक्षी निर्लंबित, सीएम ने मांगा जवाब

देहरादून (हि.स.)। वनाग्नि रोकने में लापरवाही बरतने पर 10 वन दारोगा-आरक्षी के निर्लंबन के साथ कुल 17 अधिकारियों-कर्मियों पर अनुशासनिक कार्रवाई हुई है। इसमें दो अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है तो पांच अधिकारियों को मुख्यालय संबद्ध किया गया है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने जंगलों में आग लगने की जिम्मेदारी तय करते हुए 17 रेंजर, दारोगा और वन आरक्षियों पर बड़ी कार्रवाई की है। इनमें से 10 कर्मियों को तत्काल निर्लंबित कर दिया है। जबकि सात के विरुद्ध कार्रवाई की गई है। इस कार्रवाई से वन विभाग में हड़कंप मच गया है। मुख्यमंत्री धामी ने आग लगाने में संलिप्त तत्वों पर कठोर -शेष पृष्ठ दो पर

सैम पित्रोदा ने दिया एक और विवादित बयान, कहा- दक्षिण के लोग अफ्रीकी जैसे और पूर्वोत्तर के चाइनीज...!

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा ने एक बार फिर विवादित बयान दे दिया है। उनका कहना है कि दक्षिण के लोग अफ्रीकी और पूर्वोत्तर के चाइनीज जैसे दिखते हैं। देश में विविधता की बात करते हुए पित्रोदा ने ये विवादित बयान दिया है। एक इंटरव्यू में उनकी तरफ से कहा गया कि ये देश काफी विविध है, सभी एकजुट रहते हैं। लेकिन संदेश देने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग उन्होंने किया, उस पर नया विवाद छिड़ गया है। सैम पित्रोदा ने कहा कि हमारे देश में पूर्वोत्तर के लोग चाइनीज जैसे दिखते हैं, पश्चिम के अरब जैसे हैं और दक्षिण के अफ्रीकी जैसे, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, हम सभी भाई-बहन की तरह रहते हैं। अब भाजपा ने इस बयान के बाद फिर कांग्रेस पर निशाना साधा है। जोर देकर कहा है कि कांग्रेस की विचारधारा देश को बांटने वाली है। इससे पहले विरासत टैक्स का जिक्र कर भी पित्रोदा ने कांग्रेस के लिए मुश्किलें खड़ी कर दी थीं। एक बयान में पित्रोदा ने कहा था कि अमेरिका में तो विरासत टैक्स चलता है। अगर किसी के पास 100 मिलियन डॉलर की भी संपत्ति है, तो उसके मरने के बाद 45 फीसदी अगर बच्चों के पास जाती है तो 55 फीसदी सरकार ले लेती है। ये काफी दिलचस्प कानून है। कानून कहता है कि आपकी अपनी सारी संपत्ति



चमड़ी के रंग के आधार पर भेदभाव स्वीकार नहीं : पीएम

नई दिल्ली (हि.स.)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को सैम पित्रोदा की हालिया टिप्पणी के लिए उनकी कड़ी आलोचना की। उन्होंने कहा कि देश चमड़ी के रंग के आधार पर भेदभाव स्वीकार नहीं करेगा। तेलंगाना के वारंगल में दूसरी जनसभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि भारतीयों के अपमान को बर्दाश्त नहीं करेगा। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी का नाम लिए बिना कटाक्ष करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि मुझे पता चला कि अमेरिका में एक अंकल हैं जो शहजादे के दार्शनिक मार्गदर्शक हैं और क्रिकेट में तीसरे अंपायर की तरह यह शहजादा

कांग्रेस ने किया किनारा टिप्पणी अत्यंत गलत व अस्वीकार्य : जयराम

नई दिल्ली। पूर्व में भारतीय चीनियों जैसे दिखते हैं जबकि दक्षिण में लोग अफ्रीकी जैसे दिखते हैं... कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा ने यह टिप्पणी कर एक बड़ा विवाद खड़ा कर दिया है। बीजेपी ने इसकी तीखी आलोचना की है। सैम पित्रोदा के पीपल इन इस्ट पर कांग्रेस महासचिव संचार प्रभारी जयराम रमेश ने बयान जारी किया है। उन्होंने कहा कि सैम

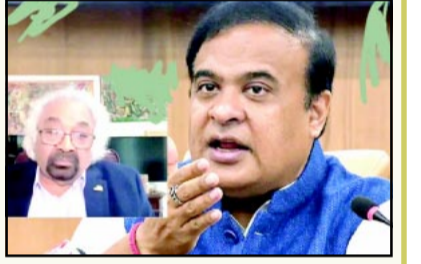
पूर्वोत्तर का अपमान करने पर पित्रोदा के खिलाफ मामला दर्ज कराएंगे : बीरेन सिंह

इंफाल (हि.स.)। मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह पूर्वोत्तर के लोगों के बारे में गैरजिम्मेदाराना टिप्पणी करने के लिए कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराएंगे। मुख्यमंत्री मुख्यमंत्री बीरेन सिंह ने बुधवार को कहा कि कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा ने भारतीय नागरिकों को चेहरे के आधार पर बांटा है। उन्होंने सैम की टिप्पणियों को नस्लवादी और गैरजिम्मेदाराना बताया है। पित्रोदा ने कहा कि उत्तर-पूर्व के नागरिक खुद को चीनी नहीं बल्कि वफादार भारतीय मानते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि सैम पित्रोदा के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने के लिए



मैं भारतीयों की तरह हूँ : मुख्यमंत्री शर्मा

गुवाहाटी (हि.स.)। मुख्यमंत्री डॉ हिमंत विश्व शर्मा ने पूर्वोत्तर के लोगों के रंग को लेकर सैम पित्रोदा की टिप्पणी पर प्रतिक्रिया व्यक्त की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि मैं एक भारतीय की तरह दिखता हूँ, हम विविधता वाले देश के नागरिक हैं। उल्लेखनीय है कि हाल ही में एक साक्षात्कार में इंडियन ओवरसीज कांग्रेस प्रमुख सैम पित्रोदा भारत की विविधता पर टिप्पणी कर कहा था कि भारत के पूर्वी क्षेत्र के लोग चाइनीज जैसे दिखते हैं, जबकि



हायर सेकेंडरी परीक्षा 2024 के परिणाम आज होंगे घोषित



गुवाहाटी। असम हायर सेकेंडरी एजुकेशन काउंसिल (एचएसईसी) 9 मई को सुबह 9 बजे हायर सेकेंडरी (एचएस) परीक्षा परिणाम-2024 घोषित करेगा। असम

एचएस 12वीं के नतीजे छात्रों के लिए आधिकारिक वेबसाइट ahsec.assam.gov.in और resultsassam.nic.in पर सुबह 9 बजे उपलब्ध कराए जाएंगे। छात्र अपना रोल नंबर और जन्मतिथि दर्ज करके ऑनलाइन मार्कशीट डाउनलोड कर सकते हैं। इस साल, 2,80,216 छात्र एचएसईसी 12वीं परीक्षा में शामिल हुए हैं, जिनमें से 1,39,486 लड़के और 1,42,732 लड़कियां हैं। 54,287 सार्स स्ट्रीम से, 2,06,467 आर्ट्स से और 17,582 कॉमर्स से हैं। मंत्री प्रेस कांफ्रेंस में टॉपर्स, परिणाम आंकड़े, उत्तीर्ण प्रतिशत, जिलेवार प्रदर्शन की भी घोषणा करेंगे। यदि परिणाम के समय आधिकारिक वेबसाइट

अरुणाचल में महसूस किए गए भूकंप के झटके

नई दिल्ली। अरुणाचल प्रदेश में बुधवार को भूकंप के झटके महसूस किए गए हैं जिसकी तीव्रता 3.1 रही। वहीं राष्ट्रीय भूकंपीय निगरानी केंद्र (एनएसएमसी) के अनुसार अभी तक जान-माल के नुकसान की कोई खबर नहीं है। भूकंप के झटके सुबह चार बजकर 55 बजे महसूस किए गए। वहीं, पिछले कई महीनों में कश्मीर से लेकर भारत के अन्य जगहों पर भूकंप के झटके महसूस किए जा चुके हैं।

राजभवन का सीसीटीवी कोई भी सामान्य नागरिक देख सकता है लेकिन पुलिस को नहीं देंगे : राज्यपाल

कोलकाता (हि.स.)। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल डॉक्टर सी.वी. आनंद बोस ने अपने ऊपर लगे यौन उत्पीड़न के आरोपों पर बुधवार को बड़ी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि राज्य के किसी भी आम नागरिक को वह राजभवन का सीसीटीवी फुटेज दिखाने के लिए तैयार हैं। उनके खिलाफ राजभवन में एक अस्थायी महिला कर्मचारी से छेड़छाड़ की शिकायत दर्ज करायी है। इसके बाद राज्य की सत्ताधारी पार्टी



लेकिन हर किसी के लिए नहीं। राजभवन की ओर से जारी बयान के मुताबिक कि पश्चिम बंगाल का कोई भी नागरिक सीसीटीवी फुटेज देख सकता है, केवल दो पक्ष ऐसा नहीं कर सकते। एक राजनेता ममता बनर्जी और दूसरे पुलिसकर्मी। इस संबंध में राजभवन द्वारा बुधवार को एक्स (पूर्व में ट्विटर) हैंडल पर एक लिखित घोषणा प्रकाशित की गई है। बताया गया है कि ये फुटेज एक प्रोग्राम के जरिए दिखाया जाएगा। बंगाल के किसी भी हिस्से से कोई भी इच्छुक नागरिक सीसीटीवी फुटेज देखने के लिए अपना पंजीकरण करा सकता है। गवर्नर बोस ने

अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल ने की भारतीय चुनाव प्रणाली की तारिफ, कहा- हमने ऐसा उत्सवपूर्ण चुनाव कभी नहीं देखा

भोपाल (हि.स.)। भारतीय चुनाव व्यवस्था का अवलोकन और अध्ययन करने के लिए पांच मई को भोपाल आये फिलीपीन्स और श्रीलंका के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल ने बुधवार को निर्वाचन सदन भोपाल में मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन से मुलाकात की। इस दौरान अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल ने 5 से 7 मई तक निर्वाचन की प्रत्येक प्रक्रिया के अवलोकन के अनुभव साझा



करते हुए बताया कि महात्मा गांधीजी के देश में लोकतंत्र यहां के लोगों के दिलों में जंदा है। भारतीय चुनाव को एक पर्व की तरह मनाते हैं। हमने ऐसा

उत्सवपूर्ण चुनाव कभी नहीं देखा। लोकतंत्र की मजबूती के लिए यहां के हर मतदाता की आस्था और उसकी अभिव्यक्ति अभिभूत कर देने वाली है। हमने तीन दिनों में बहुत कुछ देखा, समझा और सीखा। इस आनंदपूर्ण चुनाव प्रणाली से हमें प्रेरणा मिली है। हम अपने देश में भारतीय निर्वाचन व्यवस्था की सभी अच्छी व्यवस्थाओं को लागू करने की अनुशंसा करेंगे। श्रीलंका के प्रेसीडेंशियल कमीशन

कांग्रेस विचार शून्य पार्टी, संविधान की काँपी लेकर चलते हैं राहुल : नड्डा

बिलासपुर (हि.स.)। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा ने बुधवार को हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर में आयोजित पन्ना प्रमुख सम्मेलन में कांग्रेस पर तीखे प्रहार किए। उन्होंने कांग्रेस की तुष्टिकरण एवं सनातन विरोधी राजनीति पर जमकर निशाना साधा। नड्डा ने अपने संबोधन में कांग्रेस को विचार शून्य पार्टी करार दिया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी को संविधान की जानकारी नहीं है और इस वजह से वो संविधान की काँपी साथ लेकर चलते हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस पार्टी राम विरोधी, सनातन विरोधी और राष्ट्र विरोधी ताकतों के साथ हाथ मिलाने वाली पार्टी है। सोनिया गांधी जब यूपीए की चेयरपर्सन थी, तब यूपीए की सरकार ने भगवान श्री राम के अस्तित्व पर सवाल उठाए थे और भगवान को काल्पनिक बताकर कोर्ट में हलफनामा दिया था। कांग्रेस



-शेष पृष्ठ दो पर

अल्फा (स्वा.) ने राज्य के सिनेमाघरों से की अपील, कहा- हिंदी फिल्मों के बजाय प्रतिश्रुति की स्क्रीनिंग को दें प्राथमिकता

गुवाहाटी। प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असोम (ईडिफेंड) (अल्फा (स्वा.)) ने एक ईमेल संदेश के माध्यम से सभी को निर्माता राहुल बरुआ की प्रतिश्रुति देखने का आग्रह किया है, जिसमें युवाओं के बीच अत्यधिक नशीली दवाओं के दुरुपयोग और समाज पर उनके दुष्प्रभावों को दिखाया गया है। ईमेल के माध्यम से एक सार्वजनिक संदेश में अल्फा (स्वा.) ने उल्लेख किया कि असम की युवा पीढ़ी के बीच नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के प्रसार को रोकने के लिए उपाय करना आवश्यक है। यह अप्रसंगिक है कि आज की युवा पीढ़ी कल देश का भविष्य है। वे उस भविष्य में न केवल अपने लिए, बल्कि एक समाज और देश के हितों को प्राप्त करने में सक्षम हैं, लेकिन हाल ही में कई युवा लोग ऐसी दवाओं के



-शेष पृष्ठ दो पर

शुभ अक्षय तृतीया

MCJ Beauty with Quality

Flat 25% OFF On making charges of Gold Ornaments

Flat 5% OFF On Diamond / Platinum Ornaments

MANIK CHAND JEWELLERS GOLD DIAMOND PLATINUM

G.S. Road, Christian Basti #2343186 / 9678068944, H.B. Road, Fancy Bazar # 2732767 / 2736102, K.C. Road, Fancy Bazar # 2547454 / 9678068905, Time Square Mall, Zoo Road #2203101 / 9678068936, Imperial Mall, Club Road, Silchar # 236002 / 04, Shillong, Courtyard by Marriott #9678068930

manikchandjewellers1 manikchandjewellers_mcj 9678068937

EXCHANGE YOUR OLD GOLD JEWELLERY WITH NEW JEWELLERY | WE ACCEPT ALL MAJOR DEBIT AND CREDIT CARDS

CLASSIFIED

For all kinds of classified advertisements please contact

97070-14771
86382-00107

MURTI AVAILABLE

Available all kinds of Marble & White Metal Murties, Ganesh Laxmi, Radha Krishna, Bishnu-Laxmi, Hanuman, Maa Durga, Saraswati, Shivaling, Nandi etc.

ARTCLE WORLD,
S-29, 2nd Floor, Shoppers Point, Fancy Bazar, Guwahati-01, Ph. **: 94350-48866, 94018-06952**

चुनाव में इंडी गठबंधन को मिल रहा अपार जनसमर्थन : सुमन मल्लिक

अररिया (हिंस)। कांग्रेस प्रवक्ता सुमन कुमार मल्लिक ने तीसरे चरण में बिहार में हुए पांच सीट पर चुनाव में इंडी गठबंधन के जीत का दावा किया। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के चुनाव में कांग्रेस के साथ ही गठबंधन के सभी प्रत्याशी की जीत सुनिश्चित है। मल्लिक ने खुशी जताते हुए कहा की लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण में जिस तरह से कोसी-सीमांचल के सभी मतदाता लोकतंत्र के इस उत्सव में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाए, ये आहत की सराहनीय है। मल्लिक ने कहा की लोकसभा चुनाव का परिणाम देश की दिशा और दशा तय करेगा। उन्होंने कहा की इस बार कई लोकसभा क्षेत्रों में अनेकों मजबूत स्वतंत्र प्रत्याशी की भी स्थिति बहुत बेहतर हैं और यदि वे चुनाव जीतकर आएंगे तो, वे इंडी गठबंधन को ही समर्थन देंगे। उन्होंने कहा की ये लोकसभा चुनाव का परिणाम उम्मीद से भी ज्यादा अप्रत्याशित साबित होंगे।

कन्नौज वालों सुब्रत को जिताना, मैं इसे बड़ा आदमी बनाने वाला हूं : अमित शाह

कन्नौज (हि.स.)।केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह इत्र नगरी में भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में आयोजित जनसभा को सम्बोधित करने बुधवार को पहुंचे। उन्होंने जनसभा में आई कन्नौज की भारी भीड़ से भावुक अपील करते हुए कहा कि मेरे दोस्त सुब्रत पाठक को जिताना। मैं उसे बड़ा आदमी बनाने वाला हूँ। इसके साथ ही अमित शाह ने इंडिया (आईएनडीआईए) गठबंधन पर जोरदार हमला बोला। इस दौरान परिवारवादी पार्टी को लेकर कहा कि उनको परिवार के अलावा कुछ नहीं दिखा। तिवाँ विधान सभा क्षेत्र के मुख्यालय स्थित प्रसिद्ध शक्तिपीठ अन्नपूर्णा देवी के मैदान में आयोजित जनसभा में अमित शाह ने कन्नौज से चौथी बार पार्टी से चुनाव लड़ रहे सांसद सुब्रत पाठक के समर्थन में लोगों से वोट की अपील की। इत्र नगरी में जब उनका हेलीकॉप्टर हेलीपैड पर उतरा तो सभास्थल पर जय श्रीराम के नारों से गुंजायमान हो उठा। अमित शाह के मंच पर पहुंचते ही भाजपा नेताओं ने उनका जोरदार स्वागत किया। इसके बाद माइक संभालते ही उन्होंने जिले के सभी कड़ावर नेताओं, जगप्रतिनिधियों का नाम लिया और फिर अपना भाषण माँ अन्नपूर्णा देवी, फूलमती देवी की प्रणाम तथा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. गोवर्धन लाल कनौजिया को याद कर शुरू किया। इसके बाद उन्होंने



समाजवाद के पुरोधार्द्ध राममनोहर लोहिया को भी याद कर प्रणाम अर्पित किया। अपने वक्तव्य को इत्र की सुग्ंध के साथ ही शुरू किया। उन्होंने कहा कि जैसे ही हेलीकाप्टर लैंड किया, इत्र की खुशबू नाक से होकर दिमाग तक पहुंचकर घर कर गई। चर्चा की कि जी-20 के समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विदेश से आए अतिथियों को कन्नौज का इत्र भेंट किया था। अधोद्योग में विराजमान राम लला को भी कन्नौज का ही इत्र चढ़ाया गया। साथ ही आह्वान किया कि सुब्रत पाठक को जिताने और उन्हें बड़ा आदमी बनाने की बात कही।

इसके बाद वे सीधे-सीधे मुलायम परिवार पर हमलावर हो गए। उन्होंने कहा कि मुलायम परिवार जीतता है तो आपसे मिलने नहीं आता और हारता है तो भी नहीं आता है। 2019 में आई कोरोना महामारी का जिम्मे करते हुए सवाल उठला कि कन्नौज के लोगों जब महामारी विकट थी तब अखिलेश या बहन डिंपल आए थे। सुब्रत आपके बीच था सबको टीका लगवाया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सभी को मुफ्त टीका लगवाकर सुरक्षित किया। पूरे भाषण के दौरान वे सपा और कांग्रेस पर जमकर हमलावर रहे। अमित शाह ने राहुल

गांधी पर चोट की। उन्होंने कहा कि अमेठी छोड़ा तो वायनाड गए और अब रायबरेली चले गए। इसके बाद सीधे इटली जायेंगे तो देश का भला हो जाए। उन्होंने कहा कि राहुल हिन्दुस्तान में बैठकर पाकिस्तान का काम करते हैं। एक भी सीट यहां से इंडी गठबंधन की जीती तो पटाखे पाकिस्तान में जलेंगे। सपा पर भी गृहमंत्री खूब हमलावर रहे। अपने भाषण के दौरान उन्होंने राम मंदिर मोदी सरकार में बनाए जाने तथा कांग्रेस, सपा व बसपा द्वारा अटकाए जाने की बात कहकर भीड़ से मंदिर का समर्थन भी लिया। इस दौरान जनता से सवाल किया कि राम मंदिर बना चाहिए था या नहीं। हाथ उठवाकर समर्थन लेने के बाद भी दिखाया कि दो शहजादे आ गए तो मंदिर पर बाबरी ताला लगवा देंगे। करीब आधे घंटे के भाषण के दौरान उन्होंने कई बार प्रत्याशी के पक्ष में वोट की अपील की। उन्होंने केंद्र सरकार की उपलब्धियाँ भी बार-बार गिनाईं। गृहमंत्री ने मोदी सरकार की काशी विश्वनाथ, सोमनाथ मंदिर आदि तमाम उपलब्धियाँ गिनाईं। सवाल उठया कि परिवार की दुकान चलाने वाला सांसद चाहिए या जनता की आवाज उठाने वाला ? जनता से सुब्रत पाठक को भारी मतों से जीत की अपील कर कन्नौज से अमित शाह रवाना हो गए।

जेपी नड्डा और अमित मालवीय को कर्नाटक पुलिस का समन

बेंगलुरु। लोकसभा चुनाव के दौरान कर्नाटक पुलिस ने बुधवार को भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा और पार्टी के आईटी सेल प्रमुख अमित मालवीय को समन भेजा। बता दें कि कर्नाटक पुलिस ने भाजपा को राज्य इकाई की ओर से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म *एक्स* पर शेयर किए गए एससी/एसटी समुदाय के खिलाफ एक विवादित पोस्ट मामले में समन भेजा है। कर्नाटक भाजपा के विवादित पोस्ट को लेकर कांग्रेस की राज्य इकाई ने एक प्राथमिकी दर्ज कराई है। जिसके बाद पुलिस ने जेपी नड्डा और अमित मालवीय को बेंगलुरु के हार्ड ग्रांड्स पीएस के समक्ष सात दिनों के भीतर तलब होने को कहा है।

निर्वाचन आयोग की गलती से 50 हजार मतदाता रहें वंचित : सांसद

अररिया (हिंस)। अररिया समेत बिहार के पांच लोकसभा सीटों पर तीसरे चरण में मंगलवार को मतदान संपन्न हुई। अररिया में लगभग 63 प्रतिशत मतदान पड़े। अररिया में मतदान के उपरांत सांसद व भाजपा उम्मीदवार प्रदीप कुमार सिंह ने बुधवार को अपने आवास पर कार्यकर्ताओं के साथ समीक्षात्मक बैठक की। इस दौरान निर्वाचन आयोग को दोषी ठहराते हुए सांसद ने कहा कि जिला निर्वाचन आयोग की लापरवाही की वजह से अररिया संसदीय क्षेत्र के 50 हजार मतदाता वोट नहीं डाल पाये। मैं इसकी कड़ी निंदा करता हूँ। इन्होंने आगे कहा कि जिला निर्वाचन आयोग के खिलाफ जांच कमिटी टीम गठित किया जाए और जिला में 50 हजार मतदाताओं का वोट नहीं डालने की वजह का जिला निर्वाचन आयोग पर्दाफाश करें।

तलाब में डूबने से दो बच्चों की मौत

पूर्वी चंपारण (हिंस)।जिले में कुंडवा चैनपुर थाना क्षेत्र के दोरिस्तयां गांव में बुधवार को तलाब में डूबने से दो बच्चों की मौत हो गई। पुलिस के मुताबिक दोनो बच्चे मंगलवार को शाम से ही लापता थे। बुधवार को सुबह ग्रामीणों ने तलाब में दोनों का शव देखा। जिसकी सूचना परिजनों को दी गयी। मृतक बच्चे की पहचान दोस्तियां गांव निवासी साबिर अख्तर के आठ वर्षीय पुत्र मो. अयान और जाहिद अख्तर के दस वर्षीय पुत्र मो राशिद के रूप में हुई है। घटना की

उड़ानों की संख्या में कटौती करेगी एयर इंडिया एक्सप्रेस

नई दिल्ली। पायलट की कमी से जुड़ रही एयरलाइंस कंपनी एयर इंडिया ने उड़ानों की संख्या में कटौती करने का फैसला किया है। एयर इंडिया एक्सप्रेस सीईओ आलोक सिंह ने कहा कि एयर इंडिया एक्सप्रेस अगले कुछ दिन उड़ानों में कटौती करेगी। उन्होंने कहा कि चालक दल के सदस्यों की उपलब्धता न होने से उत्पन्न स्थिति से निपटने के लिए उड़ानों की संख्या में कटौती की गई है। इससे पहले एअर इंडिया एक्सप्रेस ने मंगलवार रात से अपनी 90 से अधिक उड़ान रद्द कर दी हैं क्योंकि टाटा समूह के स्वामित्व वाली विमानन कंपनी में कथित कुप्रबंधन के खिलाफ प्रदर्शनों के तौर पर बड़ी संख्या में चालक दल के वरिष्ठ सदस्यों ने बीमार होने की सूचना दी है। सूत्रों ने बुधवार को यह जानकारी दी। इसके बाद देश के अनेक हवाईअड्डों

पर सैकड़ों यात्री फंसे हुए हैं। केरल के कुछ हवाईअड्डों पर एअर इंडिया एक्सप्रेस के कई यात्रियों ने अंतिम समय में अपनी उड़ान रद्द होने के खिलाफ प्रदर्शन किया जिनमें अधिकतर खाड़ी देशों की यात्रा करने वाले लोग शामिल थे। कुछ यात्रियों ने दावा किया कि उन्हें सुरक्षा जांच पूरी होने के बाद उड़ान निरस्त होने की सूचना दी गई। उड़ानें रद्द होने के बीच नागर विमानन मंत्रालय ने एअर इंडिया एक्सप्रेस से समस्या का तुरंत समाधान निकालने को कहा और उससे उड़ानें रद्द होने पर रिपोर्ट मांगी है। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। सूत्रों ने बुधवार को बताया कि ऐसा समझा जा रहा है कि एयरलाइन के कथित कुप्रबंधन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन के तौर पर चालक दल के 200 से अधिक सदस्यों ने बीमार होने की सूचना दी है।

ब्रिटेन की अदालत ने नीरव मोदी की जमानत याचिका खारिज की

लंदन (हि.स.)। भारत का भगोड़ा हीरा कारोबारी नीरव मोदी को ब्रिटेन की अदालत ने एक और झटका देते हुए उसकी नई जमानत याचिका को खारिज कर दिया। ज्ञात रहे कि नीरव मोदी भारत से थोखाधड़ी करके भागने के बाद से पिछले पांच साल से लंदन की जेल में बंद है। ब्रिटेन की अदालत ने उसकी जमानत याचिका यह कहते हुए खारिज किया कि उसे न्याय की पकड़ से भागने का *काफ़ी खतरा* है। हीरा व्यापारी नीरव (52) भारत में थोखाधड़ी और धनशोधन के आरोपों का सामना कर रहा है और भारत को प्रत्यर्पित करने के खिलाफ अपना मुकदमा हार गया था। लंदन में वेस्टमिंस्टर मजिस्ट्रेट अदालत ने उसके द्वारा दाखिल की गई जमानत अर्जी पर सुनवाई के दौरान वह उपस्थित

नहीं हुआ लेकिन उसका बेटा और दो बेटियाँ मौजूद थे। जिला न्यायाधीश जॉन जानी ने उसकी कानूनी टीम की इस दलील को स्वीकार कर लिया कि पिछली जमानत अर्जी करीब साढ़े तीन साल पहले दाखिल की गई थी और इतने समय बाद सुनवाई को आगे बढ़ाने की अनुमति देने के लिए परिस्थितियों में बदलाव आया है। न्यायाधीश जानी ने संक्षिप्त सुनवाई के बाद फैसले में कहा कि हालाँकि, मैं संतुष्ट हूँ कि जमानत के खिलाफ पर्याप्त आधार बने हुए हैं। एक वास्तविक और पर्याप्त जोखिम यह है कि नीरव मोदी अदालत में उपस्थित होने या गवाहों के साथ सहस्रपत्र नहीं करने में विफल रहेगा। उन्होंने कहा कि इस मामले में, किसी भी स्तर पर, एक बहुत बड़ा थोखाधड़ी का आरोपी शामिल है एसा

में जमानत नहीं दी जा सकती है और आवेदन अस्वीकार किया जाता है। सीपीएस बैरिस्टर निकोलस हर्न ने अदालत को बताया कि उसने भारतीय अदालत में आरोपों का सामना न करने के लिए अपना पूरा दुष्ट संकल्प प्रदर्शित किया है और यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि संबंधित थोखाधड़ी एक अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक है, जिसमें से केवल 40 करोड़ अमेरिकी डॉलर जब्त किए गए हैं। इसलिए, उसके पास अभी भी विभिन्न न्यायाक्षेत्रों में महत्वपूर्ण संसाधनों तक पहुंच हो सकती है। सुनवाई के लिए भारत से केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) एक संयुक्त टीम पहुंची थी और अदालत को कार्यवाही के दौरान उपस्थित रही।

पृष्ठ एक का शेष

हैं और इसलिए उन्हें हराना चाहिए। मोदी ने कहा कि मैं आज एक गंभीर सवाल पूछना चाहता हूँ। मुझे आज बहुत गुस्सा आ रहा है, अगर कोई मुझे गाली देता है तो मैं सह सकता हूँ लेकिन शहजादे के इस दारशनिक ने इतनी बड़ी गाली दी है जिसने मुझे गुस्से से भर दिया है। उन्होंने सवाल किया कि क्या देश के लोगों की क्षमता चमड़ी के रंग से तय होगी ? शहजादे को यह अधिकार कियने दिया ? संविधान को सिर पर रखकर नाचने वाले लोग इस आधार पर मेरे देशवासियों का अपमान कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने राहुल गाँधी और सैम पित्रोदा को उनकी विभाजनकारी टिप्पणी के लिए चेतावनी देते हुए कहा कि ऐसा बयान हमारे राष्ट्र की एकता को नुकसान पहुंचा सकता है। उन्होंने कहा कि मैं पृष्ठ करता हूँ कि हम सभी भगवान श्री कृष्ण के बच्चे हैं, और जाति या पंथ की परवाह किए बिना हम सभी समान हैं। प्रधानमंत्री ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि वारंगल मेरे दिल में और भाजपा की यात्रा में एक विशेष स्थान रखता है। 40 साल पहले जब भाजपा के केवल दो सांसद थे, उनमें से एक हनुमानकोंडा से थे। उन्होंने कहा कि हम आपका आशीर्वाद और स्नेह कभी नहीं भूल सकते। जब भी हमें कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, वारंगल के लोगों ने हमेशा हमारा समर्थन किया है।

पूर्वोत्तर का अपमान ...

वह पहले ही बकीलों से सलाह ले चुके हैं। उन्होंने कांग्रेस पार्टी पर *फूट डालो और राज करो* की नीति अपनाते का भी आरोप लगाया। उल्लेखनीय है कि हाल ही में एक इंटरव्यू में सैम पित्रोदा को भी अतीवधता का वर्णन करते हुए उत्तर-पूर्व क्षेत्र के साथ ही देश के अन्य हिस्सों के लोगों के चेहरे को लेकर टिप्पणी की थी।

में भारतीयों की ...

पश्चिम के लोग अरबी के तरह, उत्तर के लोग पश्चिमी देशों के लोगों की तरह तथा दक्षिण भारत के लोग अफ्रीकी लोगों की तरह दिखते हैं। सैम पित्रोदा के इस बयान को लेकर चुनाव के इस मौके पर खलबली मच गई है। कभी राजीव गांधी के करीबी और अब राहुल गांधी के करीबी सैम पित्रोदा की टिप्पणी पर असम के मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया के जरिए कहा कि भाई सैम, मैं नॉर्थ इस्ट से हूँ और भारतीय जैसा दिखता हूँ। हम एक विविध देश में रहते हैं- हम अलग अलग समाज हैं, लेकिन हम सभी एक हैं। हमारे देश के बारे में थोड़ा तो समझ लो। डॉ. शर्मा ने पित्रोदा को भारत को बेहतर ढंग से समझने की सलाह दी है।

हायर सेकेंडरी परीक्षा...

अनुत्तरदायी हो जाती है, तो वे परिणाम शिक्षा और indiaresults.com जैसी तृतीय-पक्ष वेबसाइटों पर स्विच कर सकते हैं। नतीजे *उपलब्ध* मोबाइल ऐप पर भी जारी किए जाएंगे। छात्रों को सलाह दी जाती है कि वे इसे पहले ही डाउनलोड कर लें। असम हायर सेकेंडरी एजुकेशनल काउंसिल की आधिकारिक वेबसाइट ahsec.assam.gov.in, resultsassam.nic.in पर जाएं। होमपेज पर, *एचएस परिणाम 2024 लिंक* देखें और उस पर क्लिक करें, अपना एचएसईसी रोल नंबर दर्ज करें जैसा कि एडमिट कार्ड पर बताया गया है। परिणाम देखें पर क्लिक करें और मार्कशीट देखें, इसे डाउनलोड करें और भविष्य के संदर्भ के लिए इसका प्रिंटआउट लें। असम बोर्ड में 12 मार्च, 2024 के बीच एक ही पद पर एचएस परीक्षा आयोजित की। परीक्षा में 2.8 लाख से अधिक उम्मीदवार उपस्थित हुए। छात्रों को उनके संबंधित स्कूल/कॉलेजों से जून तक मूल मार्कशीट प्रदान की जाएगी।

राजभवन का सीसीटीवी...

स्वयं इस कार्यक्रम को आयोजित करने का निर्णय लिया। शो का नाम *सच का सामना* है। राजभवन की ओर से घोषणा में कहा गया कि इस फुटेज को दिखाने का फैसला इसलिए लिया गया ताकि ऐसा न लगे कि राजभवन सीसीटीवी फुटेज को सार्वजनिक नहीं करना चाहता है। लेकिन राजभवन और राज्यपाल पर लगाए गए झूठे आरोपों पर राजनेता ममता और उनकी पुलिस के रूख के कारण दोनों को फुटेज नहीं दिखाया जाएगा। राजभवन

की ओर से बताया गया है कि जो लोग सीसीटीवी फुटेज देखना चाहते हैं, वे राजभवन को ईमेल भेज सकते हैं। adrcrajbhavankolkata@gmail.com और govnr-2b@nic.in पर मेल भेजा जा सकता है या फिर राजभवन के नंबर 033-22001641 पर कॉल करके रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं। पहले 100 लोगों को राजभवन के अंदर की फुटेज देखने का मौका मिलेगा। गुरुवार सुबह 11:30 बजे राजभवन में सीसीटीवी फुटेज दिखाई जाएगा।

एस्ट्राजेनेका ने दुनिया ...

फैसला किया है। हालाँकि कुछ दिनों पहले कंपनी ने इस बात को भी स्वीकार किया था कि वैकसीन के कुछ साइड इफ़ेक्ट भी हैं। इसमें वैकसीन की वजह से खून का जम जाना और ब्लड प्लेटलेट्स की संख्या गिर जाना शामिल है।

उत्तराखंड : 10 वन ...

कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने जिन सचिवों की अलग-अलग जिलों की जिम्मेदारी तय करने के निर्देश दिए हैं। सभी सचिव संबंधित जनपद में जाकर वनाग्नि से प्रभावित क्षेत्रों का स्थलीय निरीक्षण करेंगे और वनाग्नि को रोकने के लिए प्रभावी कदम उठाएंगे।

हमने ऐसा उत्सवपूर्ण ...

ऑफ इन्क्वयरी टू मेक रिकमंडेशन्स फॉर इलेक्शन लॉ रिफार्स के कमीशन मेंबर सुंश्याम अरुमैनाय्याहम ने बताया कि मतदान के दिन हमने देखा कि निर्वाचन में नियुक्त हर व्यक्ति बखूबी अपना काम कर रहा था। कोई भी दूसरे के काम में दखल नहीं दे रहा था। मतदाता बड़े धैर्य के साथ अपनी बारी के इंतजार में खड़े थे। सभी मतदान केंद्रों में मतदान की शानदार व्यवस्थाएँ थीं। श्रीलंका की कमीशन मेंबर निमालका फर्नांडो ने कहा कि भारत की निर्वाचन व्यवस्था अभिभूत कर देने वाली है। हम बेहद प्रभावित हैं और श्रीलंका की भी ऐसे ही चुनाव की व्यवस्था के लिए प्रशंसा करेंगे। फिलीपीन्स के कमीशन ऑन इलेक्शन्स की डायरेक्टर सेलिया बी. रोमेरो ने कहा कि हमने मतदान सामग्री वितरण से लेकर मतदान पूरा होने तक को सभी प्रक्रियाओं को करीब से देखा। यह एक चकित कर देने वाला अनुभव था। इंबीएम में हर अभ्यर्थी का नाम, उसका दल, उसकी फोटो और उसके चुनाव चिन्ह का भी प्रदर्शन किया गया था। यहां मतदाता को अपनी पसंद के उम्मीदवार की पहचान करने और उसे चुनने का बेहद सरल और सहज माध्यम उपलब्ध कराया जाता है। यह एक अनुकरणीय व्यवस्था है। कमीशन ऑन इलेक्शन्स की एसोसिएट कमिश्नर सोकोर्रो बी. इंटिंग ने कहा कि भारतीय निर्वाचन व्यवस्था एक समावेशी प्रक्रिया का पालन करते हुए मतदाताओं को उनकी सहभागिता के अवसर उपलब्ध कराती है। मतदाताओं को मतदान से जोड़ने की आपकी प्रणाली से हम अभिप्रेरित हैं। उन्होंने स्वतंत्र, निष्पक्ष और शांतिपूर्ण निर्वाचन सम्पन्न कराने के लिए भारत निर्वाचन आयोग और मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी को बधाई दी। श्रीलंका के प्रेसीडेंशियल कमीशन ऑफ़ इन्क्वयरी टू मेक रिकमंडेशन्स फॉर इलेक्शन लॉ रिफार्स के चेयरमैन स्टिप्स वीवेज प्रियसंथ गेरार्ड डेप ने कहा कि भारतीय निर्वाचन प्रणाली की एक अच्छी तस्वीर हमेशा के लिए हमारे दिलों में अंकित हो गयी है। इंबीएम से वोट प्रणाली से हम चकित हैं। आप कितनी खूबों से इंबीएम से चुनाव कर लते हैं। यहां हर मतदाता के पास उसका अपना पहचान पत्र है। इससे किसी भी मतदाता को मतदान करने में कोई कठिनाई नहीं आती। हम ऐसी ही समन्वित चुनाव प्रणाली की अनुशंसा अपने देश के लिए करेंगे। इंटरनेशनल डेलिगेशन के अन्य प्रतिनिधि फिलीपीन्स के कमीशन ऑन इलेक्शन्स की एजीक्यूटिव असिस्टेंट लेसली एन सी. कॉनक्विला तथा श्रीलंका के प्रेसीडेंशियल कमीशन ऑफ़ इन्क्वयरी टू मेक रिकमंडेशन्स फॉर इलेक्शन लॉ रिफार्स के कमीशन मेंबर अलीसंदरालेज सेनानायके, कमीशन मेंबर अहमद लेब्बे मोहम्मद सलीम, कमीशन मेंबर निमालका फर्नांडो, कमीशन मेंबर विश्वानागे दीपानी सामंथा रॉडरिगो, कमीशन मेंबर एलन करमाइकल वेरे तंविनायागम डैविड सहित कमीशन सेक्रेट्री माधवा देवासुरेंद्र भी इस अवसर पर मौजूद थे। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन ने इंटरनेशनल डेलिगेशन के सभी सदस्यों का शॉल-श्रीफल से सम्मान किया

दक्षिण के लोग ...

बच्चे के लिए नहीं छोड़नी है, लेकिन आधी पब्लिक लिए छोड़ देनी चाहिए। भारत में तो ऐसा कोई कानून नहीं है। अगर 10 मिलियन भी कमा रहा है, मरने के बाद वो सारा पैसा बनकर को मिलता है, पब्लिक के पास कुछ नहीं जाता। लोगों को इस पर डिबेट करना चाहिए। अब मुझे पता कि निष्कर्ष क्या निकलेगा, लेकिन जब कांग्रेस संपति बांटने की बात करती है, बात नए कानूनों की है। ये कानून आम आदमी के हित के होते हैं, सिर्फ अमीरों के हित के नहीं। अब उस बयान के बाद ही भाजपा ने उसे बड़ा मुद्दा बना लिया था। पार्टी की तरफ से अमित मालवीय ने कहा कि कांग्रेस ने भारत को बर्बाद करने की ठान ली है। अब सैम पित्रोदा 50 फीसदी विरासत टैक्स की वकालत कर रहे हैं। इसका मतलब है कि जो भी आप अपनी मेहनत से कमा रहे हैं, उसका 50 फीसदी हिस्सा आपको दे लिया जाएगा, ये उस टैक्स से अलग होगा जो आप समय पर देते हैं। उधर अपने विवादित बयान के बाद इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के चेयरमैन पद से सैम पित्रोदा ने इस्तीफा दे दिया। पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया है। कांग्रेस पार्टी के महासचिव जयराम रमेश ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर एक पोस्ट के माध्यम से यह जानकारी दी। उन्होंने लिखा कि सैम पित्रोदा ने अपनी मर्जी से इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने का फैसला किया है। कांग्रेस अध्यक्ष ने उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया है। उल्लेखनीय है कि पित्रोदा का इस्तीफा भारतीयों के रंग को लेकर उनकी हालिया टिप्पणी के बाद आया है। इसमें उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों के भारतीय कैसे दिखते हैं और उन्हें रंग के आधार पर अफ्रीकी व अन्य देशों का बताया था। उनके बयान ने लोकसभा चुनाव के बीच एक बड़ा राजनीतिक विवाद खड़ा कर दिया और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनके बयान पर कड़ी आपत्ति जताई।

टिप्पणी अत्यंत गलत...

पित्रोदा की टिप्पणी अत्यंत गलत व अस्वीकार्य हैं और कांग्रेस इन उपामों से अपने आप को पर्ण रूप से अलग करती है। जयराम रमेश ने टवींट कर कहा कि सैम पित्रोदा द्वारा पॉडकास्ट में भारत की विविधता को दर्शाने के लिए नैयार की गई उपामें बेहद दुर्भाग्यपूर्ण और अस्वीकार्य हैं। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस इन उपामों से खुद को पूरी तरह से अलग करती है। एक साक्षात्कार में पित्रोदा ने एक लोकतांत्रिक उदाहरण के रूप में भारत की स्थिति पर चर्चा करते हुए कहा कि देश के लोग 75 वर्षों तक बहुत खुशहाल माहौल में रहे, जहां लोग यहां-वहां के कुछ झगड़ों को छोड़कर एक साथ रह सकते थे। पित्रोदा ने कहा कि हम भारत जैसे विविधतापूर्ण देश को एक साथ रख सकते हैं - जहां पूर्व के लोग चीनी जैसे दिखते हैं, पश्चिम के लोग अरब जैसे दिखते हैं, उत्तर के लोग गारे जैसे दिखते हैं और दक्षिण के लोग अफ्रीकी जैसे दिखते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। हम सभी भाई-बहन हैं। उन्होंने कहा कि हम सभी अलग-अलग भाषाओं, अलग-अलग धर्मों, रीति-रिवाजों और भोजन का सम्मान करते हैं। यही वह भारत है जिसमें मैं विश्वास करता हूँ, जहां हर किसी के लिए एक जगह है और हर कोई थोड़ा-बहुत समझौता करता है। पित्रोदा की विवादास्पद टिप्पणी पर प्रतिक्रिया देते हुए असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि सैम भाई, मैं पूर्वोत्तर से हूँ और मैं भारतीय जैसा दिखता हूँ। हम एक विविध देश हैं - हम अलग दिख सकते हैं, लेकिन हम सभी हैं एक। हमारे देश के बारे में थोड़ा तो समझ लो। अभिनेत्री से नेता बनीं कंगना रनौत ने कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा और पित्रोदा की टिप्पणियों को *नस्लवादी और विभाजनकारी* बताया। उन्होंने तंज कसते हुए उन्हें कांग्रेस सांसद राहुल गांधी का गुरु बताया।

चमड़ी के रंग के ...

साधते हुए कहा कि शहजादे के अमेरिका में रहने वाला गाइड और फिल्ॉस्फर ने आज बड़ा रहस्य खोला है। उसने कहा है कि जिनकी चमड़ी का रंग काला होता है, ये सब अफ्रीका के हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि आज स्पष्ट हो गया कि कांग्रेस राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की चमड़ी के रंग का हवाला देकर उनका अपमान क्यों करती रहती है। उन्होंने मान लिया कि द्रौपदी मुर्मू भी अफ्रीकन

नौकरी छोड़ कर शुरू किया दुग्ध उत्पादन, रोहित बना युवाओं के लिए प्रेरणा

गोलाघाट (हिंस)। जिले के बोकाखात में एक युवक ने दुग्ध उत्पादन के जरिए आत्मनिर्भरता की राह चुनी है। उसने दो अन्य परिवारों को भी रोजगार दिया है। सबसे खास बात यह है कि बिना सरकारी मदद के निजी कर्ज से उसने एक जर्सी गाय से शुरू किया व्यवसाय में 70 जर्सी गायें कर ली हैं। गोलाघाट जिलांतर्गत बोकाखात विधानसभा क्षेत्र के कुरुआबाही के बाढ़ प्रभावित सगुरी सवला गांव निवासी रोहित साहू पहले दूसरे राज्य में सुरक्षा गार्ड के रूप में काम करते थे। रोहित ने अपने दोस्त परिवारों की देखा देखी दुग्ध उत्पादन की राह चुनी। रोहित ने सुरक्षा गार्ड की नौकरी छोड़ कर घर आ गया और जर्सी गाय खरीदने के लिए अपनी पालतू देसी गाय को बेच दी। रोहित ने एक जर्सी गाय से अपना दुध का व्यवसाय शुरू किया और आज उसके पास 70 जर्सी गायें हैं। रोहित साहू ने बताया कि जर्सी गाय पालकर वह प्रतिदिन लगभग 350 लीटर दुध का उत्पादन कर रहे हैं। रोहित ने युवा पीढ़ी से अपील की कि वे सरकारी नौकरी के पीछे न भागें और न ही पलायन करें। घर पर रहकर गाय पालन और अन्य गतिविधियों से आत्मनिर्भर बनें और अपने परिवार को भी समय दें। युवाओं को स्वावलंबी बनने के लिए आज रोहित एक उदाहरण बन गया है।

बराक घाटी में ईंधन संकट बरकरार



गुवाहाटी (हिंस)। बराक घाटी के हैलाकांटी जिले में तीन दिनों से ईंधन संकट जारी रहने के बाद करीमगंज जिले में भी बुधवार से तेल की किल्लत शुरू हो गई है। करीमगंज शहर और जिले के विभिन्न हिस्सों में पेट्रोल और डीजल का भंडार कम हो गया है। एक पंप ने जहां आम जनता को तेल देना बंद कर दिया है वहीं, एक या दो पंपों में सीमित मात्रा में तेल दिया जा रहा है। वाहनों में तेल भरने के लिए पेट्रोल पंपों पर लंबी कतारें देखी जा रही हैं। इधर, डिमा हसाओ जिले में रेलवे ट्रैक क्षतिग्रस्त होने के कारण यात्री ट्रेनें तो चल रही हैं, लेकिन भीड़ होने के कारण माल गाड़ियों का परिचालन रोक दिया गया है। गुवाहाटी से मेघालय के रास्ते राष्ट्रीय राजमार्ग 6 और डिमा हसाओ होते हुए कम गाड़ियां जा रही हैं। वहीं, राजमार्ग संख्या 27 पर ईस्ट वेस्ट कॉरिडोर की भी स्थिति खराब हो गई है, जिसके कारण बराक के लोगों को राज्य के अन्य हिस्सों से संपर्क बनाए रखना भी मुश्किल हो रहा है। नतीजतन, बराक घाटी के तीनों जिलों में ईंधन की कमी के साथ ही आवश्यक वस्तुओं और सब्जियों की किल्लत हो गई है।

हुब्लिल्लि जं. और नाहरलागुन के बीच एसी स्पेशल ट्रेन



गुवाहाटी (हिंस)। गर्मी में भीड़ के दौरान यात्रियों की सुविधा के लिए पूर्वोत्तर सीमा रेल (पूसीरे) ने एसएसएस हब्लिल्लि जं. और नाहरलागुन के बीच एसी समर स्पेशल ट्रेनों के परिचालन का निर्णय लिया है। समर स्पेशल ट्रेन संख्या 07387/07388 (एसएसएस हब्लिल्लि जं.-नाहरलागुन-एसएसएस हब्लिल्लि जं.) दोनों दिशाओं में पांच-पांच ट्रेनों

के लिए चलाई जाएगी। इस मार्ग पर चलने वाली अन्य ट्रेनों की प्रतीक्षा सूची वाले यात्री इन एसी विशेष ट्रेनों में गर्मी के दौरान आरामपूर्वक यात्रा करने के अवसर का लाभ उठा सकते हैं। पूसीरे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी सत्यंशु श्री ने आज बताया है कि स्पेशल ट्रेन संख्या 07387 (एसएसएस हब्लिल्लि जं.-नाहरलागुन) 08 मई से 05 जून तक

रकीबुल हुसैन के हारने पर पद त्याग करेंगे प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष



गुवाहाटी (हिंस)। असम प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष भूपेन बोरा ने कहा है कि यदि धुबड़ी लोकसभा अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे देंगे। कांग्रेस अध्यक्ष सीट से कांग्रेस के उम्मीदवार रकीबुल हुसैन चुनाव

में पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि चुनाव के दौरान जिस प्रकार कांग्रेस के कार्यकर्ताओं से लेकर नेताओं तक ने एड़ी-चोटी की ताकत लगाकर कार्य किया है, उसके लिए वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं। कांग्रेस अध्यक्ष ने निष्पक्ष रूप से समाचार प्रकाशित और प्रसारित करने के लिए असम की मीडिया को भी धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि असम की मीडिया पूरी तरह निष्पक्ष होकर कार्य कर रही है। इस दौरान कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि असम में विपक्षी दलों द्वारा कांग्रेस के नेतृत्व में बनाए गए विरोधी ऐक्य मंच के सभी घटक दलों ने पूरी ताकत के साथ चुनाव के दौरान एकजुटता दिखाई। उन्होंने कहा कि गठबंधन के तीन घटक दलों ने इस दौरान गठबंधन के नियमों को तोड़ा। बुधवार को मीडिया से बातचीत करते हुए कांग्रेस अध्यक्ष ने चुनाव कार्य में लगे सभी कर्मचारियों, पदाधिकारियों, सुरक्षा बलों आदि को धन्यवाद दिया।

कार में तेल भरवा कर चालक फरार

नगांव (हिंस)। नगांव जिलांतर्गत पुरनीगोदाम के कासरगांव इलाके में स्थित एक पेट्रोल पंप से कार में तेल डलवाने के बाद बिना पैसा दिए फरार होने का मामला सामने आया है। इस संबंध में पेट्रोल पंप प्रबंधन ने प्राथमिकी दर्ज करायी है। पुलिस ने बुधवार को बताया कि आज तड़के पेट्रोल पंप में एक कार 2,810 रुपए का तेल डलवाने के बाद जैसे ही पंप का कर्मचारी पैसा लेने के लिए कार के करीब पहुंचा चालक तेज रफतार से बिना पैसा दिए कार लेकर फरार हो गया। घटना के संबंध में पंप के मैनेजर द्वारा स्थानीय थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई गई है। पुरनीगोदाम पुलिस सीसीटीवी वीडियो के आधार पर मामले की जांच कर रही है।

तीन दिनों से फेरी सेवा बंद, यात्री परेशान



गुवाहाटी (हिंस)। असम समेत पड़ोसी राज्यों में हो रही लगातार बरसात को वजह से ब्रह्मपुत्र नदी और इसकी सहायक नदियों का जलस्तर काफी बढ़ गया है। जिसके चलते नदियों के किनारे रहने वाले लोगों के लिए बाढ़ की स्थिति पैदा होने लगी है। इस बीच राजधानी गुवाहाटी से उत्तर गुवाहाटी के बीच ब्रह्मपुत्र नदी में चलने वाली फेरी (यंत्र चालित नाव) सेवा गत 06 मई से बंद है। आज तीसरे दिन भी गुवाहाटी-उत्तर गुवाहाटी के बीच चलने वाली फेरी सेवा बंद है। जिसकी वजह से नदी मार्ग से आवाजाही करने वाले यात्रियों को काफी परेशानियों

का सामना करना पड़ रहा है। नदी के जलस्तर में वृद्धि होने के चलते फेरी घाटों के रैंप पानी में डूब गये हैं। इसको देखते हुए अंतर्देशीय जल परिवहन विभाग ने तीन फेरी घाटों को बंद कर दिया है। जिसके चलते यात्रियों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। मिली जानकारी के अनुसार जब तक फेरी घाटों के रैंप की मरम्मत नहीं हो जाती तब तक फेरियों का परिचालन संभव नहीं है। ज्ञात हो कि फेरी से प्रतिदिन गुवाहाटी-उत्तर गुवाहाटी के बीच हजारों की संख्या में यात्रियों का आना-जाना होता है।

रंगिया : एनटी रोड से चार पहिया वाहन चोरी



रंगिया (विभास)। रंगिया नगर में चार पहिया वाहन की चोरी की घटनाएं लगातार देखी जा रही हैं। इसबार नंबर 2 रंगिया वैद्युतिक उप-समंडल के प्रबंधक कार्यालय के पास से एक मालवाहक बोलोरो वाहन चोरी की घटना सामने आई है। राजी एनटी रोड स्थित एक कंक्रीट उद्योग से ए एस 25 सी सी 2973 नंबर का एक मालवाहक बोलोरो वाहन चोर लेकर फरार हो गए। प्राप्त जानकारी के अनुसार कंक्रीट फेक्ट्री तथा वाहन के मालिक ने जब सुबह वाहन को अपनी जगह पर नहीं देखा तो उसने अंदाजा लगाया कि वाहन चोरी हो गया है। वहीं इसके बाद आसपास के व्यवसायों के सीसीटीवी कैमरों में देखने के बाद पुष्टि हुई कि वाहन रात्रि 2.32 बजे चोरी हो गया। इसके पश्चात वाहन के मालिक समशेर अली ने रंगिया थाने में इसकी शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

अवैध हथियार के साथ अल्फा का पूर्व कैडर गिरफ्तार



तिनसुकिया (हिंस)। हथियारों की तस्करी के मामले में यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम (उल्फा) के पूर्व सदस्य धन बोरा को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने बुधवार को बताया कि यह गिरफ्तारी तिनसुकिया जिले के दुमदुमा में हुई। एक गुप्त सूचना पर कार्रवाई करते हुए सुरक्षा बलों ने तलाशी अभियान चलाया। दुमदुमा के कोर्टोइगुरी बरगारा स्थित बोरा के निवास से उसे गिरफ्तार लिया गया। छापेमारी के दौरान बोरा के पास से एक अमेरिकी पिस्तौल के साथ 12 राउंड जिंदा कारतूस बरामद किया गया। मामले में आगे की जांच चल रही है। गिरफ्तार बोरा से पूछताछ की जा रही है।

वसूली के आरोप में एनआरएफएम कैडर गिरफ्तार

इंफाल (हिंस)। सुखा बलों ने इंफाल में प्रतिबंधित नेशनल रिवोल्यूशनरी फ्रंट ऑफ मणिपुर (एनआरएफएम) सक्रिय कैडर को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार उग्रवादी की पहचान हेड्समैन जेम्स सिंह उर्फ कुमार (33) के रूप में हुई है। उसे रिम्स गेट के पास लाम्पेल्स रिम्स रोड से पकड़ा गया। मणिपुर पुलिस ने बुधवार को बताया कि गिरफ्तार उग्रवादी इंफाल में संगठन के लिए जबरन वसूली की गतिविधियों में शामिल था।

मणिपुर में 5457 अवैध घुसपैठिए चिह्नित

इंफाल (हिंस)। मणिपुर सरकार ने कामजोग जिले में कुल 5457 अवैध अप्रवासियों की पहचान की है। इनमें से अब तक 5173 ऐसे अवैध अप्रवासियों का बायोमेट्रिक डेटा एकत्र किया गया है। इसी बीच निवासन की प्रक्रिया भी चल रही है। मुख्यमंत्री ने बुधवार को सोशल मीडिया के जरिए कहा कि अबतक पहचाने गए सभी अवैध अप्रवासियों को मानवीय सहायता दे रहे हैं।

विश्व रेडक्रॉस दिवस समारोह में शामिल हुए राज्यपाल

इटानगर (हिंस)। अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल लेफिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) के टी परनायक ने आज तामो रिबा इस्टोडियुट आफ हेल्थ एंड मेडिकल साइंस (टीआरआईएचएमएस), नाहरलागुन में विश्व रेड क्रॉस दिवस समारोह में भाग लिया। राज्यपाल ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और रेड क्रॉस मूवमेंट के संस्थापक जीन हेनरी ड्यूनेंट और उन सभी रेड क्रॉस स्वयंसेवकों को पुष्पांजलि अर्पित की जिन्होंने मानवता के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया। राज्यपाल ने अपने संबोधन में भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी, अरुणाचल प्रदेश राज्य शाखा के अध्यक्ष और स्वयंसेवकों से रेड क्रॉस के उद्देश्य को फैलाने और अपनी गतिविधियों को उद्देश्यपूर्ण और प्रभावी बनाने का आह्वान किया। उन्होंने प्राकृतिक आपदाओं, महामारों और आकस्मिक आपात स्थितियों के समय चुनौतियों को कम करने के समर्थन तरीकों के बारे में लोगों को शिक्षित करने के लिए शिक्षा



संस्थानों को शामिल करते हुए सेमिनार और परिचर्चा आयोजित करने का सुझाव दिया। रेड क्रॉस स्वयंसेवकों को निराश्रितों, अनाथों और उपेक्षित समाजों और टीबी, एचआईवी, नशीली दवाओं से प्रभावित लोगों तक पहुंचने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्होंने घरानों से रेड क्रॉस के पहल में शामिल होने का भी आह्वान

दयालु राज्य बनाने का प्रयास करें, जो एक-दूसरे की परवाह करता हो। राज्यपाल ने लोगों, विशेषकर युवाओं से स्वयंसेवा की भावना अपनाने और भारतीय रेड क्रॉस का हिस्सा बनने का आह्वान किया। उन्होंने शैक्षणिक संस्थानों, आदिवासी संगठनों और कॉर्पोरेट घरानों से रेड क्रॉस के पहल में शामिल होने का भी आह्वान

किया। राज्यपाल ने समाज को किसी भी आपात स्थिति में कुशलतापूर्वक प्रतिक्रिया देने के लिए अधिक संरचनात्मक तरीके से पुनर्गठित करने की सिफारिश की। उन्होंने कहा कि आईआरसीएसएपीएसबी को अन्य स्वयंसेवी संगठनों का अनुकरण करना चाहिए, जैसे तिरप और चांगलांग जिलों के गैर सरकारी

पूर्व ग्रामरक्षक तथा नगरबेड़ा थाना समिति के अध्यक्ष का निधन



नगरबेड़ा (विभास)। नगरबेड़ा थाना क्षेत्र के नगरबेड़ा निवासी और ग्रामरक्षक के सेवानिवृत्त सिकिल आयोजक अबुल कलाम आजाद का बीते दिनों निधन हो गया। मालूम हो कि लंबे समय से दिल का दौरा पड़ने पर इलाज चल रहा था। अबुल कलाम आजाद की अचानक हुई मौत से पूरे क्षेत्र में शोक पसरा हुआ है। नगरबेड़ा के ब्लॉक प्राथमिक अस्पताल में उनकी मृत्यु हो गई। हालांकि उन्हें बेहतर इलाज के लिए गुवाहाटी जीएमसीएच रेफर कर दिया गया था, लेकिन रास्ते में ही उसने दम दौड़ दिया। बताया जाता है कि वह थाना समिति के अध्यक्ष के पद पर कार्यरत थे। इसके अलावा विभिन्न सामाजिक कार्यों में शामिल थे। अपनी मृत्यु के समय, वह अपने पीछे एक बेटा और दो बेटियां सहित एक रिश्तेदार छोड़ गए। उनकी मौत से पूरे नगरबेड़ा क्षेत्र में शोक की लहर है।

एनडीए सरकार ने गरीबों, किसानों, युवाओं और महिलाओं की प्रगति-सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त किया : गडकरी

पटना, बेगूसराय (हिंस)। बिहार में बेगूसराय लोकसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार और केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह के समर्थन में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने बुधवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में विगत 10 वर्षों में भाजपा नीत एनडीए की सरकार ने गरीबों, किसानों, युवाओं और महिलाओं सहित सभी के प्रगति और सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त किया है। गडकरी ने कहा कि राजमार्गों के निर्माण से बिहार का अपेक्षित विकास संभव हो रहा है। विकास को प्राथमिकता देते हुए मटिहानी की जनता इस बार भी गिरिराज सिंह को चुनकर भाजपा-राज्य को विजयी बनाएगी, यह मुझे विश्वास है। उन्होंने कहा कि बिहार में कांग्रेस-राजद की सरकार में जो काम 60 साल में नहीं हुआ वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दस वर्ष के शासनकाल में हमने



करके दिखाया है। दस साल में बिहार में नेशनल हाईवे का जाल बिछाया गया है। गंगा नदी सहित अनेक नदियों पर लंबे-लंबे पुल का निर्माण हुआ है। गडकरी ने कहा कि

अच्छी सड़क, बिजली और टेलिकम्युनिकेशन से रोजगार और उद्योग बढ़ता है। बेरोजगारी, भूखमरी और गरीबी भी दूर होती है। उन्होंने कहा कि केंद्र में सहयोगी गिरिराज सिंह ने

अपने विभाग के जरिए अनेक गांवों को मजबूत रोड से जोड़ने का काम किया। बेगूसराय सहित पूरे बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों का जाल बिछाया जा चुका है, जो गिरिराज सिंह के मंत्रालय की ही देन हैं। गडकरी ने कहा कि देश बदल रहा है। मैं जिस क्षेत्र से आता हूँ वहां 10 हजार किसानों ने आत्महत्या की। वर्ष 2004 में किसानों को उनकी फसल की कीमत नहीं मिलती थी। उस समय पेट्रोलियम मंत्री राम नाईक के साथ मुझे ब्राजील जाने का मौका मिला। वहां से लौटने के बाद हमने यह प्लान बनाया कि हमारा किसान इथोनॉल बनाएगा। गन्ना मिलों से 380 किलोवाट बिजली का उत्पादन हो रहा है। हमारे यहां का किसान अननदाता नहीं, अब ऊर्जादाता बन गया है। आने वाले पांच सालों में हमारी सरकार में पूरे देश के किसान केवल अननदाता ही नहीं, बल्कि ऊर्जादाता भी बनेंगे।

राहुल के चुनावी प्रचार का प्रियंका ने किया आगाज, बोलीं-रायबरेली से है परिवारिक रिश्ता



रायबरेली (हिंस)। प्रियंका वाड़ा ने बुधवार को भाई राहुल गांधी के चुनावी प्रचार का आगाज किया। उन्होंने बखरावा विधानसभा में कई नुककड़ सभाओं को संबोधित किया। वह थुलवासा में नुककड़ सभा को संबोधित करते हुए कहा कि रायबरेली से उनके परिवार का पुराना रिश्ता है। उन्होंने कहा कि भाजपा ने आम जनता को गुमराह करने का

काम किया है। हमारी सरकार आएगी तो आशा वर्कर, मनरेगा आदि कर्मचारियों का मानदेय दुगुना करेंगे। अंग्रेजी सरकार के समय से पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ जुड़ा संबंध अभी भी जीवंत है। प्रियंका वाड़ा ने भाजपा पर हमला बोलते हुए कहा कि हमारी सरकार आएगी तो कर्ज माफ़ी के लिए स्थायी आयोग बनायेंगे। जीएसटी की समस्या दूर करेंगे। भाजपा के लोग चुनाव के पहले 200 रुपए सिलेंडर का दाम कम करके लॉलीपॉप दे रहे हैं। इस जिले से हमारा पुराना नाता है। ब्रिटिश गवर्नमेंट के समय से पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ जुड़ा संबंध अभी भी जीवंत है। प्रियंका ने भाजपा पर हमला बोलते हुए राहुल गांधी को विजयी बनाने की अपील की। कहा राहुल गांधी को जिलापट्टी तो आपको दो-दो सांसद मिल जाएंगे।

बाड़मेर लोकसभा क्षेत्र के एक पोलिंग बूथ पर पुनर्मतदान शुरू, नौ बजे तक 7.96 प्रतिशत वोट पड़े

जयपुर (हिंस)। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार राजस्थान के बाड़मेर लोकसभा क्षेत्र के चौदह नव विधानसभा के दुधवा खुर्द गांव में एक पोलिंग बूथ पर बुधवार सात बजे से पुनर्मतदान शुरू हुआ। इस लोकसभा क्षेत्र में दूसरे चरण के दौरान 26 अप्रैल को मतदान हुआ था। सुबह नौ बजे तक एक बूथ पर 7.96 प्रतिशत मतदान हुआ है। वोटिंग शुरू होने के साथ बूथ पर लंबी-लंबी लाइनें लग गईं। प्रशासन व पुलिस की ओर से कड़े बंदोबस्त किए हुए थे। उल्लेखनीय है कि मतदान दिवस 26 अप्रैल को चौदह नव विधानसभा के बूथ नंबर 50 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, दुधवा खुर्द पर मत की गोपनीयता भंग होने की शिकायत

प्राप्त होने के बाद पुनर्मतदान किया जा रहा है। पोलिंग बूथवार को सुबह 7 बजे शुरू हुई। इस बूथ पर 1294 वोटर्स हैं, जो अपने मत का दोबारा प्रयोग करेंगे। 26 अप्रैल को वोटिंग के दिन यहां पर कुल 1294 में से 1120 वोट पड़े थे। 86.55 प्रतिशत वोटिंग हुई थी। बुधवार सुबह से महिलाओं और पुरुषों में दोबारा वोट देने के लिए उत्साह नजर आया। बूथ पर सुबह से लंबी-लंबी लाइनें लग गईं। मुख्य निर्वाचन अधिकारी प्रवीण गुप्ता ने बताया कि मतदान तिथि पर मतदान बूथ पर पंजीकृत समस्त कार्यरत एवं कामगार मतदाताओं के लिए संवैतनिक अवकाश स्वीकृत किया गया है। बूथ स्थल पर आज राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

दुधवा खुर्द में सार्वजनिक अवकाश घोषित किया गया है। मतदान समाप्त तक मतदान केंद्र में समाहित क्षेत्रों में सूखा दिवस घोषित किया गया है। इस मतदान बूथ की वेबकास्टिंग की जा रही है। गुप्ता ने बताया कि मतदान के बाद निर्वाचन सामग्री का संग्रहण राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाड़मेर में किया जाएगा। सामग्री संग्रहण के तुरन्त पश्चात बुधवार को रात्रि 9 बजे राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाड़मेर स्थित जिला निर्वाचन कक्ष में मतदान दस्तावेजों की संवीक्षा (स्कूटनी) का कार्य निर्वाचन पर्यवेक्षण की उपस्थिति में किया जाएगा। इसमें अध्यक्षीय एवं उनके निर्वाचन अधिकर्ता भी उपस्थित रहेंगे।

नौकरी चाहिए तो इंडी गठबंधन को वोट दें : तेजस्वी

डेहरी आन सोन (हिंस)। बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने बुधवार को काराकाट संसदीय क्षेत्र में महागठबंधन उम्मीदवार माले नेता राजाराम के नामांकन सह आशीर्वाद सभा को संबोधित करते हुए कहा कि अगर नौकरी चाहिए तो इंडी गठबंधन को वोट दीजिए। अगर बेरोजगारी व गरीबी चाहिए तो राजग को वोट दीजिए। काराकाट संसदीय क्षेत्र के डेहरी विधान सभा के अकोद्वीगोला प्रखंड के प्रेम नगर हाई स्कूल के मैदान में तेजस्वी यादव ने कहा कि मैं रोजगार और नौकरी की बात करता हूँ। जबकि, हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी हिंदू-मुस्लिम और मंगलपूर की बात करते हैं। उन्होंने दावा करते हुए कहा कि देश में महागठबंधन की सरकार बनने जा रही है। सरकार बनने पर गैस सिलेंडर भी सस्ते दाम पर होंगे उपलब्ध। तेजस्वी ने कहा अभी बेरोजगारी सबसे बड़ा मुद्दा है, इसलिए बदलाव आवश्यक है। बदलाव के लिए वोट की चोट जरूरी है। उन्होंने कहा कि केंद्र में सरकार बनी तो एक करोड़ युवाओं को सरकारी नौकरी दी जाएगी। एलपीजी गैस सिलेंडर भी



सस्ते दाम पर उपलब्ध कराई जाएगी। बिजली बिल भी 200 यूनिट तक फ्री कर दिया जाएगा। रक्षाबंधन पर सभी बहनों को एक-एक लाख रुपए प्रतिवर्ष का तोहफा दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि बिहार में सरकार में रहते हुए 17 महीने में 5 लाख नौकरियों का सृजन किया। उन्होंने कहा कि हमलोग सबको साथ लेकर चलते हैं। हमलोग संविधान और लोकतंत्र

को बचाना चाहते हैं। मोंके पर दीपांकर भट्टाचार्य ने कहा कि तीन चरण के चुनाव सम्पन्न हो चुके हैं। भाजपा का ग्राफ गिर चुका है। सरकार को बदलने वाला चुनाव है। इस देश के नौजवान इंतजार कर रहे हैं की मुद्दे की बात करने वाली सरकार केंद्र की गद्दी पर बैठे। इंडी गठबंधन की सरकार रोजगार देने को कार्य करेगी। स्वामीनाथन

आयोग की रिपोर्ट लागू होगी। किसानों को उसका अधिकार दिया जाएगा। बिहार से चौंकानेवाला परिणाम आएगा। वीआईपी सुप्रीमो मुकेश सहनी ने कहा कि लोकतंत्र में जनता मालिक है। महागठबंधन उम्मीदवार को जिताने की अपील करते हुए मुकेश ने कहा कि यह स्वामिनाथन की लड़ाई है। मल्लाह के बेटे ने गंगाजल लेकर संकल्प लिया है कि भाजपा को हराना है और दिल्ली की गद्दी से हटाना है। उन्होंने इंडी गठबंधन के हर कार्यकर्ता को जीत दिलाने के लिए मेहनत करने की अपील की। मोंके पर राजद विधायक फतेहबहादुर सिंह, पूर्व केंद्रीय मंत्री कांति सिंह पूर्व मंत्री अनिता चौधरी, ओबरा विधायक रिषी कुमार, नवीनार विधायक डब्ल्यू सिंह उर्फ विजय सिंह, सासाराम विधायक राजेश गुप्ता, कामरेड अशोक कुमार सिंह, डेहरी डालमियागंजर नगर परिषद मुख्य सार्वद शशि कुमार राजद अतिपिछड़ा सेल के प्रदेश महासचिव गुड्डू चन्द्रवंशी समेत संसदीय क्षेत्र के आप, राजद, वी आईपी, माले, सीपीआई के भारी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद थे।

यादव समाज के प्रत्याशियों की चंता करे सपा नेतृत्व : मायावती

लखनऊ (हिंस)। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव की टीका टिप्पणी पर पलटवार करते हुए कहा कि सपा नेतृत्व परिवार एवं यादव समाज के प्रत्याशियों की चंता करें। मायावती ने बुधवार को एक्स पर कहा कि बसपा संगठन में क्या कुछ चल रहा है, इस पर घोर दलित-विरोधी सपा अगर कोई टिप्पणी व चंता नहीं करे तो बेहतर है। इसके बदले सपा नेतृत्व को चुनाव में उतारे गए उनके अपने परिवार व उनके यादव समाज के प्रत्याशियों का क्या हाल है, इसकी चंता करें क्योंकि उन सब का हाल बहला है। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि सपा का चाल, चरित्र व चेहरा, हमेशा की तरह आज भी जबरदस्त दलित, अति-पिछड़ा व संविधान में इनको दिए गए आरक्षण के अधिकारों की विरोधी पार्टी का है। प्रमोशन में आरक्षण को खत्म करना तथा इस संबंध में बिल को संसद में फाइनाल इनके ऐसे कार्य हैं, जिसे माफ करना मुश्किल है। बसपा अध्यक्ष ने इतिहास की ओर इशारा करते हुए कहा कि बसपा सरकार द्वारा बहुजन समाज में जन्मे महान संतों, गुरुओं व महापुरुषों के आदर-सम्मान में उनके नाम पर उत्तर प्रदेश में बनाए गए जिलों, पार्कों, विश्वविद्यालयों के नाम को जातिवादी सोच के कारण सपा सरकार में बदला गया। ये ऐसे कृत्य हैं जो इतिहास में काले कारनामे के रूप में दर्ज हैं।

नौजवानों ने ठान लिया है इस बार ये बीजेपी सरकार बचेगी नहीं : अखिलेश

फर्रुखाबाद (हिंस)। समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने फर्रुखाबाद लोकसभा से पार्टी के प्रत्याशी डॉ नवल किशोर शाक्य के समर्थन में आयोजित जनसभा में जनता से वोट की अपील की। अखिलेश ने मंच से जनता को संबोधित करते हुए कहा कि मैं सोचता हूँ कहां से बात शुरू करूँ, ये जो नौजवान दिखाई दे रहे हैं, इन्होंने मन बना लिया है, ठान लिया है इस बार ये बीजेपी सरकार बचेगी नहीं। सपा अध्यक्ष ने किसानों की समस्याओं को उठाते हुए भाजपा सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि हमारा किसान कर्ज के बोझ में दबता जा रहा है। इन लोगों ने बड़े-बड़े उद्योगपतियों का 16 लाख करोड़ रुपए माफ कर दिया, लेकिन हमारे गरीब और किसान जिनका कर्ज का कर्ज था, उसको माफ नहीं किया। उन्होंने कहा कि इन बीजेपी वालों ने नौकरी ना देकर के हमारे नौजवानों का 10 साल नहीं एक तिहाई जीवन खराब कर दिया, कोई भविष्य नहीं। अगिनवीर वाली भर्ती आई, ये अगिनवीर भर्ती हम लोग स्वीकार नहीं करते हैं। ये



चुनाव हमारा आपका तो है ही लेकिन ये चुनाव हमारी आने वाली पीढ़ी का चुनाव है। ये बीजेपी वालों को फर्रुखाबाद की जनता बदल देगी। आप लोग जानते होंगे जो लोग हारने वाले होते हैं वो लोग खिसिया जाते हैं। बीजेपी के लोग जब जनता में हारने लगे तो प्रशासन को आगे करके लोगों को डाटा-धमका रहे हैं। जनसभा के बाद अखिलेश यादव ने पत्रकारों से बातचीत की। उन्होंने सवाल

का जवाब देते हुए कहा कि लगातार सरकार जो प्राइवेट कर रही चीजों को, आउटसोर्स कर रही है, अगिनवीर व्यवस्था ला रही है इससे नौजवान दुःखी है और जितना प्राइवेटाइजेशन बढ़ेगा उतना हमारा आरक्षण छिनेगा। उन्होंने कहा कि इसबार ममजयी नहीं चलेगी, ममजयी की कोई सुन नहीं रहा है और भारतीय जनता पार्टी की हर कहानी फेल हो रही है।

ऑर्गन ट्रांसप्लांट मामला मैड सफर नाम की कंपनी के डायरेक्टर व दलाल को भेजा जेल

जयपुर (हिंस)। फर्जी एनओसी के जरिए ऑर्गन ट्रांसप्लांट मामले में जवाहर सफिल थाना पुलिस ने बुधवार को मैड सफर नाम की कंपनी के डायरेक्टर सुमन जाना व दलाल सुखमय नंदी को कोर्ट में पेश किया, जहां दोनों को जेल भेज दिया गया। पुलिस इस मामले में अरेस्ट अन्य लोगों से लगातार पुछताछ कर अंत तकरी और प्रत्यारोपण मामले में जानकारी जुटा रही है। फिलहाल पुलिस पुछताछ कर कड़ी से कड़ी जोड़ रही है। इसके बाद इस मामले में फोर्टिस, मणिपाल और ईएचसीसी अस्पताल के कई डॉक्टरों की गिरफ्तारी संभव है। इस मामले में फरार रांची का दलाल मोहम्मद मुर्तजा अंसारी व राजकमल नायक जो कि इसी कंपनी में काम करता था उन्हें पकड़ने के लिए प्रयास जारी है। गौरतलब है कि किडनी ट्रांसप्लांट के लिए जयपुर के फोर्टिस और ईएचसीसी अस्पताल ने कानूनी कार्यवाही से बचने के लिए फरीदाबाद, दिल्ली की इसी कंपनी से एमओयू कर रखा था। यह कंपनी दलालों के जरिए बांग्लादेश से किडनी के डोनर व रिसेवर ढूंढती थी। सौदा तय होने के बाद उनके फर्जी दस्तावेज तैयार करवाए जाते थे और उन्हें जयपुर भेजा जाता था। ट्रांसप्लांट के लिए रिसेवर से रिकॉर्ड पर सिर्फ आठ से दस लाख रुपए लेना दिखाया जाता था, लेकिन वसूली पच्चीस से तीस लाख रुपए की होती थी।

पिछड़ा वर्ग सम्मेलन में एक-एक मत को भाजपा के पक्ष में करने की बनी रणनीति

रायबरेली (हिंस)। भाजपा के पिछड़ा वर्ग सम्मेलन में भाजपा नेताओं ने ओबीसी मोर्चा के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को अपने समाज के एक-एक मत पर नजर रखने और उन्हें भाजपा के पक्ष में करने का मंत्र दिया है। ओबीसी मोर्चा के प्रतीय मंत्री अभिलाष कौशल के आयोजन में आयोजित कार्यक्रम में नेताओं ने कार्यकर्ताओं में जोश भर और कहा कि रायबरेली में कमल खिलाते के हम सब करीब हैं, बस हिलाई न बरती जाए। उंचाहार के सेनी उत्सव लॉन में आयोजित कार्यक्रम में पिछड़ा वर्ग आयोग के उपाध्यक्ष हीरा ठाकुर ने कहा कि पूरा भाजपा की डबल इंजन की सरकार ने संपूर्ण ओबीसी समाज के हित में कई काम किए हैं। समाज के लोगों के उत्थान और उन्हें आर्थिक रूप से समृद्ध करने के लिए सरकार ने कई क्रांतिकारी कदम उठाए हैं। भाजपा में पिछड़े वर्ग के लोगों को शीघ्र पर प्रतिनिधित्व दिया गया। इसलिए अब यह दायित्व बनता है कि हम एक-एक मत भाजपा को देकर कमल खिलाएँ। लोकसभा संयोजक रामदेव पाल ने कहा कि राहुल



गांधी वायनाड और रायबरेली दोनों स्थान से चुनाव लड़ रहे हैं। उनको यह बताना चाहिए कि चुनाव बाद वह कौन सीट छोड़ेंगे। उन्होंने कहा कि चुनाव बाद रायबरेली से भाग जाने वालों के चक्कर में न पड़े और रायबरेली से भाजपा को जिताने मोदी को पीएम बनाने में योगदान दें। ओबीसी मोर्चा के प्रतीय मंत्री अभिलाष कौशल ने कार्यकर्ताओं से कहा कि अपने-अपने समाज के एक-एक मत पर नजर रखना है और हर एक मत भाजपा को दिलाकर भारत के नवनिर्माण में भागीदार बनना है। कार्यक्रम को जिलाध्यक्ष राधेश्याम सोनी, अंजली मौर्या ने भी संबोधित किया। इस मौके पर कृष्ण चंद्र जायसवाल, महेंद्र पटेल महेंद्र पटेल, बृज लाल लोधी राजू सोनी, गुड्डू यादव, उमेश साहू, सतवी साहू, उज्ज्वल पटेल, राजू यादव, रमेशसोनी, राम मूरत जायसवाल, लक्ष्मी सोनी, रीना पाल, अमरेश यादव, रामलखन गुप्ता, मंडल अध्यक्ष पवन सिंह, सैफ महेंदी, परमेश पटेल, अजय यादव, विनीत कौशल समेत बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

जयपुर बम ब्लास्ट की सोलहवीं बरसी पर होगा सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ

जयपुर (हिंस)। राजधानी जयपुर में जयपुर बम ब्लास्ट की सोलहवीं बरसी तेरह मई को होने जा रही है। जिसके चलते तेरह मई को जौहरी बाजार सांगानेरी गेट जयपुर स्थित पूर्व मुखी हनुमान मंदिर में शाम को एक विशाल सामूहिक हनुमान चालीसा का पाठ किया जाएगा। जिसमें हजारों की संख्या में जयपुरवासी हनुमान चालीसा का पाठ कर बजरंग बली से सुख-शांति और खुशहाली की प्रार्थना करेंगे। जौहरी बाजार सांगानेरी गेट जयपुर स्थित पूर्व मुखी हनुमान मंदिर महंत मदन लाल शर्मा ने बताया कि जयपुर शहर में 13 मई 2008 को विभिन्न स्थानों पर हुए सीरियल बम ब्लास्ट की सोलहवीं बरसी 13 मई 2024 यानी सोमवार को है और जयपुर बम ब्लास्ट में शहीद हुए निर्दोष लोगों की आत्मा की शांति के लिए विशाल सामूहिक हनुमान चालीसा का पाठ का आयोजन किया गया है। इस सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ जयपुरवासी सहित राजनेता और समाजसेवी सहित हजारों लोग उपस्थित रहेंगे। साथ ही अगले दिन 14 मई



यानी मंगलवार को पूर्व मुखी हनुमान मंदिर में हनुमान जी का दुर्गाभिषेक किया गया है और साथ ही सभी लोगों द्वारा हनुमान जी महाराज से बम ब्लास्ट में शहीद हुए निर्दोष लोगों की आत्मा की शांति की प्रार्थना करेंगे और इस तरह की कोई अप्रिय घटना दोबारा न हो। इसकी हनुमान जी महाराज से प्रार्थना की जाएगी। इस दुर्गाभिषेक कार्यक्रम में शहीद हुए लोगों के परिजन सहित अन्य लोग भी उपस्थित रहेंगे।

विपक्षी पार्टियों में हाहाकार, एनडीए गठबंधन 400 पार : राज्यसभा सदस्य बृजलाल

लखनऊ (हिंस)। भारतीय जनता पार्टी के राज्य मुख्यालय पर राज्यसभा सदस्य बृजलाल ने बुधवार को पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि देश में अबकी बार 400 पार है। इसलिए विपक्षी परिवारी पार्टियों में हाहाकार है। बृजलाल ने कहा कि तीन चरणों के मतदान के बाद स्पष्ट हो गया है कि देश में भाजपा और एनडीए गठबंधन प्रचंड बहुमत के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार बनाने जा रहा है। आम जनमानस में भाजपा के प्रति व्यापक जनसमर्थन है। इसलिए विपक्षी गठबंधन के नेता हताशा और निराश हैं और अनर्गल प्रलाप कर रहे हैं। भाजपा के राज्यसभा सदस्य ने कहा कि भाजपा को समाज के सभी वर्गों का समर्थन मिल

रहा है, इससे विपक्षी भी हताशा और निराश हैं। उन्हें हर तरफ बुरी तरह अपनी पराजय दिख रही है। हाल यह है कि कोई प्रदेश अध्यक्ष बदल रहा है तो कोई कोआर्डिनेटर बदल रहा है। उन्होंने कहा कि सुना है कि सपा के प्रदेश अध्यक्ष बीच चुनाव केवल इसलिए बदल दिए गए कि वे चुनाव लड़ रहे थे। इस लिहाज से तो राष्ट्रीय अध्यक्ष को भी बदल दिया जाना चाहिए। इंडी गठबंधन के नेता चुनाव में ही आपसी हिंसा-किताब निपटा रहे हैं। सपा मुखिया के घर की अंतर्कलह किसी से छिपी नहीं है। बृजलाल ने कहा कि इंडी अलायंस के नेताओं ने पहले चुनाव को मजहबूरी रंग देने का काम किया। अब वे जाति और रंग के आधार पर समाज को बांटने का काम कर रहे हैं।

जयपुर (हिंस)। सर्व ब्राह्मण महासभा की ओर से चलाये जा रहे प्रदेश स्तरीय परशुराम जन्मोत्सव समारोह के अंतर्गत बुधवार को बनीपार्क स्थित महासभा के प्रदेश कार्यालय में भगवान परशुराम जी का व्यक्तिगत एवं कृतित्व विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। सर्व ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंडित सुरेश मिश्रा ने कहा कि भगवान परशुराम चौबीस अवतारों में श्रेष्ठ माने जाते हैं। वे वेद शास्त्रों के ज्ञाता, वेद सूत्रों के रचयिता, श्राप व आशीर्वाद दोनों देने में सक्षम हैं। वहीं वे प्रचण्ड योद्धा और दिव्य शास्त्रों में पूर्णतया दक्ष हैं। परशुराम जी ने भगवान कृष्ण, बलराम, भीष्मपितामह, कर्ण व अनेक योद्धाओं को गुरु के रूप में दीक्षा दी, वे चिरंजीवी हैं और भविष्य



में कलंकी अवतार को भी दीक्षा देंगे और हम सभी को भगवान परशुराम के गुणों को आत्मसात करते हुए जीवन पर्यन्त चलना चाहिए। इस अवसर पर आशीष पराशर, पंकज पचलगाँविया, पंकज शर्मा सोडाला, विनोद शर्मा,

पंडित घनश्याम शर्मा, देवेन्द्र शर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। परशुराम के पद चिन्हों पर चलने की युवाओं से आह्वान किया। अन्य वक्ताओं में नीलम मिश्रा, प्रियंका शर्मा सांगाने ने कहा कि परशुराम की मातृ भक्ति के उदाहरण

युवाओं तक पहुंचाने चाहिए और सभी वक्ताओं ने परशुराम पर अपने विचार रखे। इस अवसर पर समाज के प्रबुद्धजनों ने अपने विचार परशुराम जी पर रखे। परशुराम जन्मोत्सव 2024 के उल्लेख में राज्यसभा ब्राह्मण महासभा के तत्वाधान में 11 मई को राजधानी जयपुर में भगवान परशुराम की विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया जा रहा है। 11 मई को छोटी काशी जयपुर के जलेब चौक से स्वामी रामरतन दिवाचार्य महाराज, हाथोज धाम महत एवं हवामहल विधायक बालमुकुंदचार्थ सहित अन्य प्रमुख संत महात्माओं के नेतृत्व में भव्य परशुराम शोभायात्रा का श्रोगणेश होगा। जो बड़ी चौपड सांगानेरी गेट वापू बाजार चौडा रास्ता, होते हुए छोटी चौपड पर यात्रा का समापन होगा।



मारुति सुजुकी इस हफ्ते न्यू जेनरेशन मॉडल की नई स्विफ्ट करेगी लॉन्च

नई दिल्ली।

मारुति सुजुकी अपनी टॉप सेलिंग हैचबैक स्विफ्ट के न्यू जेनरेशन मॉडल को लॉन्च करने जा रही है। लॉन्च से पहले 2024 मॉडल स्विफ्ट को जानकारियां सामने आ गई हैं। यह हैचबैक अपनी फोर्थ जेनरेशन अवतार में काफी खास लुक-डिजाइन और फीचर्स के साथ आ रही है। इसके साथ ही इंजन-पावर और माइलेज में भी नई स्विफ्ट अपने पुराने मॉडल के मुकाबले अलग ही है।

2024 मारुति सुजुकी स्विफ्ट एलएक्सआई, वीएक्सआई, वीएक्सआई (ओ), जेडएक्सआई और जेडएक्सआई+ जैसे 5 टिम् लेवल के 10 से ज्यादा वैरिएंट में लॉन्च हो सकते हैं, जिनमें सीएनजी भी लगे

होंगे। मोडिया रिपोर्ट्स की मानें तो नई स्विफ्ट में नोवेल ऑरिज और लस्टर ब्लू जैसे कलर मिलेंगे। बाद में इसमें मौजूदा मॉडल वाले सिंगल टोन और डुअल टोन कलर ऑप्शन तो होंगे।

नई मारुति सुजुकी स्विफ्ट का लुक और डिजाइन काफी जबरदस्त होगा। इस हैचबैक के न्यू जेनरेशन मॉडल में नई फ्रंट हेडलाइट, नए डीआरएल और फॉगलैंप, रीडिजाइन्ड बंपर, बेहतर डिजाइन वाली अलॉय व्हील, रियर में नया टेलरैल पंख बाहरी खूबियां भी दिखने लायक होंगी। कंपनी नई स्विफ्ट को स्पोर्टी लुक और डिजाइन के साथ पेश करेगी। बीते 19 साल से भारतीय बाजार में जलवा बिखरने वाली स्विफ्ट अब नए

अवतार में बदली-बदली नजर आएगी।

न्यू जेनरेशन मारुति सुजुकी के एक्सटीरियर की तरह ही इंटीरियर में बदलाव किया है। वैसे इंटीरियर और फीचर्स के बारे में पुख्ता डिटेल तो 9 मई को पता चल सकेगी, लेकिन खबर है कि 2024 स्विफ्ट का इंटीरियर कंपनी की क्रॉसओवर फ्रॉन्टसे से इस्पायट होगा। बेहतर इंटीरियर से लैस इस हैचबैक के फीचर्स भी कमाल के होंगे। इसमें 9 इंच का स्मार्ट प्ले प्रो प्लस टचस्क्रीन इन्फोटेनमेंट सिस्टम, वायरलेस स्मार्टफोन कनेक्टिविटी, वायरलेस चार्जर, रियर में भी एसी वेंट, सुजुकी की कनेक्टड कार टेक्नॉलजी, कई तरह के यूएसबी चार्जिंग पोर्ट्स जैसे स्टैंडर्ड फीचर्स के साथ 6 एयरबैग

समेत काफी सारे सेफ्टी फीचर्स इसमें शामिल किए गए हैं।

नई मारुति सुजुकी स्विफ्ट में ऑल न्यू 1.0 लीटर 3 सिलिंडर जी-सीरीज पेट्रोल इंजन लगा है, जो कि माइल्ड हाइब्रिड टेक्नॉलजी से लैस होगा और यह करंट मॉडल में मौजूद 4 सिलिंडर के-सीरीज इंजन को रिप्लेस करेगा। मोडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक नई स्विफ्ट का नया इंजन 81.6 पीएस की मैक्सिमम पावर और 112 न्यूटन मीटर का पीक टॉर्क जेनरेट करने में सक्षम होगा। नई स्विफ्ट की माइलेज 25.72 किमी/परहास तक की हो सकती है। इसमें 5 स्पीड मैनुअल और ऑटोमेटेड मैनुअल ट्रांसमिशन विकल्प भी दिए गए हैं।

न्यूज़ ब्रीफ

परिवारों की बचत पांच साल में सबसे कम, तीन साल में 9 लाख करोड़ घटी 2020-21 के बाद से आ रही गिरावट

नई दिल्ली। देश में परिवारों की शुद्ध बचत (घरेलू बचत) पिछले तीन वर्षों में 9 लाख करोड़ रुपये से

अधिक घटकर 2022-23 में 14.16 लाख करोड़ रुपये रह गई है। यह 2017-18 के बाद परिवारों की शुद्ध बचत का पांच साल का निचला स्तर है। उस दौरान शुद्ध घरेलू बचत 13.05 लाख करोड़ रुपये रही थी। सांख्यिकी व कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय की ओर से मंत्रालय की जारी आंकड़ों के मुताबिक, वित्त वर्ष 2020-21 में शुद्ध घरेलू बचत अपने शीर्ष पर पहुंच गई थी। उस दौरान परिवारों ने शुद्ध रूप से 23.29 लाख करोड़ रुपये की बचत की थी। इस अवधि के बाद से परिवारों की शुद्ध बचत लगातार घट रही है। मंत्रालय ने अपने ताजा आंकड़ों में कहा है कि वित्त वर्ष 2018-19 में परिवारों ने शुद्ध रूप से 14.92 लाख करोड़ रुपये की बचत की थी। वित्त वर्ष 2018-19 में यह आंकड़ा बढ़कर 15.49 लाख करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। 2020-21 में अपने शीर्ष पर पहुंचने के बाद 2021-22 में परिवारों की शुद्ध बचत फिर घटकर 17.12 लाख करोड़ रुपये रह गई। वित्तीय देनदारी : 73 फीसदी बढ़ी, बैंक कर्ज 11.88 लाख करोड़ परिवारों पर वित्तीय देनदारी 2022-23 में 73 फीसदी बढ़कर 15.6 लाख करोड़ पहुंच गई। 2021-22 में यह आंकड़ा 9 लाख करोड़ था इस अवधि में परिवारों की वित्तीय बचत 26.1 लाख करोड़ से 14 फीसदी बढ़कर 29.7 लाख करोड़ रुपये पहुंच गई। परिवारों पर वित्तीय संस्थानों एवं गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों का कर्ज भी तीन वर्षों में चार गुना बढ़ा है। 2022-23 में यह बढ़कर 3.33 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गया। 2021-22 में यह 1.92 लाख करोड़ और 2020-21 में 93.723 करोड़ रुपये था। बैंक कर्ज भी तीन वर्षों में दोगुना होकर 2022-23 में 11.88 लाख करोड़ रुपये पहुंच गया। 2020-21 में यह 6.05 लाख करोड़ था। जीडीपी की तुलना में...बचत 5 दशक के न्यूनतम स्तर पर जीडीपी की तुलना में घरेलू बचत वित्त वर्ष 2022-23 में पांच दशक के निचले स्तर 5.3 फीसदी पर आ गई है। कोरोना काल को छोड़कर 2012 से 2022 के बीच यह 7-8 फीसदी थी। विश्लेषकों की मानें तो बहुत अधिक खपत/खर्च का लाभ उठाना जाता है। इससे कुछ वर्गों में मांग में वृद्धि हुई है। म्यूचुअल फंड : निवेश तीन गुना होकर 1.79 लाख करोड़ रुपये आंकड़ों के मुताबिक, 2022-23 में म्यूचुअल फंड में निवेश करीब तीन गुना होकर 1.79 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गया। 2020-21 में यह सिर्फ 64,080 करोड़ रुपये था। 2021-22 में म्यूचुअल फंड में 1.6 लाख करोड़ रुपये का निवेश हुआ था। वित्त वर्ष 2022-23 में डिबेंचर्स और शेयरों में भी निवेश दोगुना होकर 2.06 लाख करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। 2020-21 में यह 1.07 लाख करोड़ रुपये रहा था। 2021-22 के दौरान डिबेंचर्स और शेयरों में 2.14 लाख करोड़ रुपये का निवेश किया गया था।

कार्यान्वयन मंत्रालय की ओर से मंत्रालय की जारी आंकड़ों के मुताबिक, वित्त वर्ष 2020-21 में शुद्ध घरेलू बचत अपने शीर्ष पर पहुंच गई थी। उस दौरान परिवारों ने शुद्ध रूप से 23.29 लाख करोड़ रुपये की बचत की थी। इस अवधि के बाद से परिवारों की शुद्ध बचत लगातार घट रही है। मंत्रालय ने अपने ताजा आंकड़ों में कहा है कि वित्त वर्ष 2018-19 में परिवारों ने शुद्ध रूप से 14.92 लाख करोड़ रुपये की बचत की थी। वित्त वर्ष 2018-19 में यह आंकड़ा बढ़कर 15.49 लाख करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। 2020-21 में अपने शीर्ष पर पहुंचने के बाद 2021-22 में परिवारों की शुद्ध बचत फिर घटकर 17.12 लाख करोड़ रुपये रह गई। वित्तीय देनदारी : 73 फीसदी बढ़ी, बैंक कर्ज 11.88 लाख करोड़ परिवारों पर वित्तीय देनदारी 2022-23 में 73 फीसदी बढ़कर 15.6 लाख करोड़ पहुंच गई। 2021-22 में यह आंकड़ा 9 लाख करोड़ था इस अवधि में परिवारों की वित्तीय बचत 26.1 लाख करोड़ से 14 फीसदी बढ़कर 29.7 लाख करोड़ रुपये पहुंच गई। परिवारों पर वित्तीय संस्थानों एवं गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों का कर्ज भी तीन वर्षों में चार गुना बढ़ा है। 2022-23 में यह बढ़कर 3.33 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गया। 2021-22 में यह 1.92 लाख करोड़ और 2020-21 में 93.723 करोड़ रुपये था। बैंक कर्ज भी तीन वर्षों में दोगुना होकर 2022-23 में 11.88 लाख करोड़ रुपये पहुंच गया। 2020-21 में यह 6.05 लाख करोड़ था। जीडीपी की तुलना में...बचत 5 दशक के न्यूनतम स्तर पर जीडीपी की तुलना में घरेलू बचत वित्त वर्ष 2022-23 में पांच दशक के निचले स्तर 5.3 फीसदी पर आ गई है। कोरोना काल को छोड़कर 2012 से 2022 के बीच यह 7-8 फीसदी थी। विश्लेषकों की मानें तो बहुत अधिक खपत/खर्च का लाभ उठाना जाता है। इससे कुछ वर्गों में मांग में वृद्धि हुई है। म्यूचुअल फंड : निवेश तीन गुना होकर 1.79 लाख करोड़ रुपये आंकड़ों के मुताबिक, 2022-23 में म्यूचुअल फंड में निवेश करीब तीन गुना होकर 1.79 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गया। 2020-21 में यह सिर्फ 64,080 करोड़ रुपये था। 2021-22 में म्यूचुअल फंड में 1.6 लाख करोड़ रुपये का निवेश हुआ था। वित्त वर्ष 2022-23 में डिबेंचर्स और शेयरों में भी निवेश दोगुना होकर 2.06 लाख करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। 2020-21 में यह 1.07 लाख करोड़ रुपये रहा था। 2021-22 के दौरान डिबेंचर्स और शेयरों में 2.14 लाख करोड़ रुपये का निवेश किया गया था।

जयप्रकाश एसोसिएट्स ने नहीं चुकाया 4,616 करोड़ का कर्ज

नई दिल्ली। संकटग्रस्त जेपी समूह की प्रमुख कंपनी जयप्रकाश एसोसिएट्स लिमिटेड (जेएएल) ने मूलधन व ब्याज राशि सहित 4,616 करोड़ रुपये के कर्ज का भुगतान नहीं किया है। जेएएल ने शेयर बाजार को दी सूचना में बताया कि कंपनी ने 30 अप्रैल को 1,751 करोड़ रुपये की मूल राशि और 2,865 करोड़ रुपये के ब्याज के भुगतान में चूक की है। जेएएल ने कहा कि कंपनी का कुल उधार 29,805 करोड़ रुपये है, जिसे 2037 तक चुकाया जाना है। इसमें से 30 अप्रैल 2024 तक 4,616 करोड़ रुपये बकाया था। ये कर्ज विभिन्न बैंकों पर लिया गया है। कंपनी ने कहा कि 29,805 करोड़ रुपये की कुल उधारी में से 18,955 करोड़ रुपये प्रस्तावित विशेष प्रयोजन वाहन (एसपीवी) को हस्तांतरित किए जाएंगे। इसके लिए सभी विधिवत अनुमोदित एक व्यवस्था योजना को हितधारकों की मंजूरी मिल गई है, हालांकि यह राष्ट्रीय कंपनी विधि अधिकरण (एनसीएलटी) की मंजूरी के लिए लंबित है। कंपनी ने कहा कि किसी भी स्थिति में सम्पूर्ण पुनर्गठन के अधीन है। जेएएल ने कहा कि एक जिम्मेदार उधारकर्ता के तौर पर कंपनी उधारी को कम करने के लिए ठोस कदम उठा रही है। सीमेंट व्यवसाय के प्रस्तावित विनिवेश और विचारार्थीन पुनर्गठन के बाद, संशोधित पुनर्गठन योजना के कार्यान्वयन पर उधारी लगभग शून्य हो जाएगी।

नई दिल्ली। संकटग्रस्त जेपी समूह की प्रमुख कंपनी जयप्रकाश एसोसिएट्स लिमिटेड (जेएएल) ने मूलधन व ब्याज राशि सहित 4,616 करोड़ रुपये के कर्ज का भुगतान नहीं किया है। जेएएल ने शेयर बाजार को दी सूचना में बताया कि कंपनी ने 30 अप्रैल को 1,751 करोड़ रुपये की मूल राशि और 2,865 करोड़ रुपये के ब्याज के भुगतान में चूक की है। जेएएल ने कहा कि कंपनी का कुल उधार 29,805 करोड़ रुपये है, जिसे 2037 तक चुकाया जाना है। इसमें से 30 अप्रैल 2024 तक 4,616 करोड़ रुपये बकाया था। ये कर्ज विभिन्न बैंकों पर लिया गया है। कंपनी ने कहा कि 29,805 करोड़ रुपये की कुल उधारी में से 18,955 करोड़ रुपये प्रस्तावित विशेष प्रयोजन वाहन (एसपीवी) को हस्तांतरित किए जाएंगे। इसके लिए सभी विधिवत अनुमोदित एक व्यवस्था योजना को हितधारकों की मंजूरी मिल गई है, हालांकि यह राष्ट्रीय कंपनी विधि अधिकरण (एनसीएलटी) की मंजूरी के लिए लंबित है। कंपनी ने कहा कि किसी भी स्थिति में सम्पूर्ण पुनर्गठन के अधीन है। जेएएल ने कहा कि एक जिम्मेदार उधारकर्ता के तौर पर कंपनी उधारी को कम करने के लिए ठोस कदम उठा रही है। सीमेंट व्यवसाय के प्रस्तावित विनिवेश और विचारार्थीन पुनर्गठन के बाद, संशोधित पुनर्गठन योजना के कार्यान्वयन पर उधारी लगभग शून्य हो जाएगी।

पायलट बीमार पड़ रहे या बढ़ रहा असंतोष, टाटा के एयरलाइन कर्मचारी क्यों नाराज चल रहे

नई दिल्ली।

टाटा समूह के स्वामित्व वाली लो कॉस्ट एयरलाइन एयर इंडिया एक्सप्रेस ने कई उड़ानें रद्द कर दीं। एयर इंडिया एक्सप्रेस की 80 से अधिक उड़ानों को रद्द कर दिया गया। जानकारी के मुताबिक, एयरलाइन के चालक दल के सदस्य बड़े पैमाने पर बीमारी का हवाला देकर छुट्टी पर चले गए हैं। इसी कारण ये उड़ानें रद्द की गईं। कुछ दिनों पहले टाटा समूह की एक अन्य एयरलाइन विस्तारा में भी ऐसे ही हालात बने थे। ऐसे में बढ़ा सवाल है कि क्या टाटा समूह के एयरलाइन कर्मचारी वाकई बीमार पड़ रहे हैं या उनमें असंतोष बढ़ रहा है केबिन कर्त सदस्यों और कर्मचारियों की नाराजगी के कारण तो एयरलाइन को उड़ानों को रद्द करने जैसे फैसले नहीं लेने पड़ रहे हैं।

एक साथ ही एयरलाइन कर्मचारियों की छुट्टी पर जाने का क्या है कारण

मामले को करीब से देखने वाले सूत्रों के अनुसार एयरलाइन में कथित कुप्रबंधन के खिलाफ चालक दल के कुछ सदस्यों के प्रदर्शन के चलते उड़ानों का परिचालन रद्द किया गया है। बताया जा रहा है कि एआईएक्स कनेक्ट (एयर एशिया कनेक्ट) के साथ विलय प्रक्रिया को शुरू होने के बाद से ही केबिन कर्त के बीच असंतोष बढ़ रहा है।

एयर इंडिया एक्सप्रेस के केबिन कर्त के एक वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले एक यूनिनियन ने कर्मचारियों के कुप्रबंधन और असमान व्यवहार पर चिंता जताई है। चालक दल के 300 सदस्यों का प्रतिनिधित्व करने का दावा करने वाले एयर इंडिया एक्सप्रेस कर्मचारी संघ (एआईएक्सआईयू) ने आरोप लगाया है कि कुप्रबंधन ने कर्मचारियों का



मनोबल गिराया है।

क्या एयर इंडिया एक्सप्रेस और एयर एशिया कनेक्ट के विलय का विरोध हो रहा

अचानक उड़ानें रद्द होने पर यात्रियों ने भी सोशल मीडिया पर भी निराशा व्यक्त की है। रद्द उड़ान के बारे में एक यात्री की पोस्ट के जवाब में, एयर इंडिया एक्सप्रेस ने माफी मांगी और उड़ानों को रद्द करने के लिए परिचालन कारणों का हवाला दिया। अपने एयरलाइन कारोबार को मजबूत करने की रणनीति के तहत टाटा समूह एयर इंडिया एक्सप्रेस और एआईएक्स कनेक्ट के साथ-साथ विस्तारा का भी एयर इंडिया के साथ विलय कर रहा है। इस विलय की इस प्रक्रिया का कर्मचारी विरोध कर रहे हैं। कर्मचारी अपने साथ व्यवहार में असमानता और कुप्रबंधन का आरोप लगा रहे हैं।

क्या एयर इंडिया एक्सप्रेस और विस्तारा की चुनौतियां एक जैसी हैं

एयर इंडिया एक्सप्रेस की स्थिति टाटा समूह के स्वामित्व वाली एक अन्य

उम्मीदवारों को दरकिनारा करते हुए एयर इंडिया एक्सप्रेस से बाहर के उम्मीदवारों को जगह दी जा रही है।

विस्तारा एयरलाइन के संचालन में क्या परेशानी आई थी

इससे पहले अप्रैल में टाटा समूह के स्वामित्व वाली एयरलाइन विस्तारा एयरलाइन को पायलट्स के असंतोष से जुड़े व्यवधानों का सामना करना पड़ा था। उस दौरान 150 से अधिक उड़ानें रद्द की गई थीं। पायलट्स के सामूहिक बीमारी की बात कह कर छुट्टी पर चले जाने से कई उड़ानों का संचालन प्रभावित हुआ था। सप्ताहों में स्थिति और खराब हो गई थी जिसके कारण लगभग 80 उड़ानें रद्द कर दी गईं और 90 उड़ानों में देरी हुई। उसके बाद भी कई उड़ान रद्द किए गए थे। जानकारों के अनुसार, ऐसी परिस्थिति बनने के मध्य में एयरलाइन का एचआर विभाग था, जिससे पायलट्स और केबिन कर्त सदस्य असंतुष्ट थे। विस्तारा के एयर इंडिया के साथ विलय से पहले विलय संरचना की बात कही गई उसके अनुसार प्रति माह केवल 40 उड़ान घंटों के लिए भुगतान की गारंटी दी गई है, यह पहले 70 घंटे था। एयरलाइन के कई अधिकारियों को आशंका है कि यह परिवर्तन उनके टेक-होम वेतन को काफी हद तक कम कर सकता है। पायलट्स असंतोष के जवाब में विस्तारा के प्रबंधन ने एक अल्टीमेटम जारी किया, जिसमें पायलटों को नए वेतन ढांचे को स्वीकार करने या फिर विलय के बाद एयर इंडिया के साथ काम करने का मौका और इसके लिए मिलने वाली एकमुश्त भुगतान छोड़ने की बात कही गई। इस अल्टीमेटम के बाद हालात और बिगड़ गए और ज्यादातर पायलट बीमारी की बात कहकर छुट्टी पर जाने लगे।

सोने और चांदी की कीमतें बढ़ीं, सोना 71,200 और चांदी 82,950 के पास

नई दिल्ली।

घरेलू बाजार में सोने और चांदी की कीमतें बढ़ी हैं। दोनों के वायदा भाव बढ़ते के साथ खुले। सोने के वायदा भाव 71,200 रुपये के करीब जबकि चांदी के वायदा भाव 82,950 रुपये के करीब रहे। वहीं अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने चांदी की वायदा कीमतों में कमी आई। इस दौरान मल्टी क्रोमाइटी एक्सचेंज (एससीएक्स) पर सोने का बेंचमार्क जून अनुबंध 15 रुपये की तेजी के साथ 71,163 रुपये के भाव पर खुला। वहीं एक समय यह अनुबंध 26 रुपये की तेजी के साथ ही 71,174 रुपये के भाव पर बना हुआ था। इसके बाद ये 71,189 रुपये के भाव पर दिन के उच्च और 71,163 रुपये के भाव पर निचले स्तर पर पहुंचा। सोने के वायदा भाव पिछले माह 73,958 रुपये के शीर्ष स्तर पर पहुंचे।

इसके अलावा चांदी के वायदा भाव की आज सपाट शुरुआत हुई। एससीएक्स पर चांदी का बेंचमार्क जुलाई अनुबंध 82,878 रुपये पर खुला। एक समय यह अनुबंध 72



रुपये की तेजी के साथ ही 82,950 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। इस समय ये 82,989 रुपये के भाव पर दिन के उच्च और 82,870 रुपये के भाव पर निचले स्तर पर पहुंचा। गत माह चांदी का वायदा भाव 86,126 रुपये किलो के उच्चतम स्तर पर पहुंचा था। वहीं अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने चांदी के वायदा भाव की शुरुआत कमजोर रही। कामेक्स पर सोना 2,323 डॉलर प्रति औंस के भाव पर खुला। इसका गत दिवस बंद भाव 2,324.20 डॉलर था। वहीं इसी प्रकार चांदी के वायदा भाव 27.47 डॉलर के भाव पर खुले। इसका पिछला बंद भाव 27.54 डॉलर था।

विरासत कर की बात करने वाले भारत के मित्र नहीं पित्रोदा-राहुल के बयानों पर अर्थशास्त्री का पलटवार

नई दिल्ली।

इंडियन ओवरसीज कांग्रेस में सैम पित्रोदा के उत्तराधिकार कर (इन्हेरिटेन्स टैक्स) संबंधी टिप्पणी पर अर्थशास्त्री गौतम सेन ने पलटवार किया है। उन्होंने कहा, पहली बात तो यह कि अमेरिका में इन्हेरिटेन्स टैक्स नहीं लगाया जाता है। उनके पास विरासत कर नहीं है, उसे एस्टेट ड्यूटी और गिफ्ट टैक्स कहा जाता है। अमेरिका में, यह 2022 तक यह मुक्तकों में से 0.14 प्रतिशत द्वारा इसका भुगतान किया गया। 2.5 मिलियन लोगों में से केवल 0.14 प्रतिशत यानी पूरे अमेरिका में 4000 लोग ही एस्टेट ड्यूटी के अधीन हैं। अधिकांश सम्पदाओं को इससे छूट मिली हुई है, क्योंकि छूट की सीमा बहुत अधिक यानी 13.6 मिलियन डॉलर है। दूसरी ओर अमीरों का पैसा वास्तव ट्रस्टों के पास है। इसलिए, अमेरिका का उदाहरण भारत के लिए लिक्विड भी अच्छा नहीं है।

सभी घरों और व्यवसायों का सर्वेक्षण करने का प्रस्ताव कई कारणों से अव्यावहारिक है। भारत में, 2.4 प्रतिशत या उससे थोड़ा कम लोग आयकर का



भुगतान करते हैं। उस समूह में, मुझे लगता है कि उस में से अत्यधिक संपत्ति वाले लोगों की संख्या 12 करोड़ लोगों से अधिक नहीं है। उन्हें विरासत कर के दायरे में लाने के लिए मजबूर करने पर, आपको उनके व्यवसायों को बंद करना होगा। इसका मतलब है कि आने वाले वर्षों में आर्थिक अराजकता फैलेगी। जिसने भी इस विचार के बारे में सोचा था, वह बहुत वास्तविक रूप से नहीं सोच रहा था। अब हमारे पास जो कुछ भी है उसमें पहले की तुलना में एक एक बहुत बड़ा सुधार हुआ है। हमारे पास एक अविश्वसनीय संयोजन है जो

लगाव कभी हासिल नहीं किया गया था। यह निवेश के माध्यम से धन सृजन और पुनर्वितरण के साथ बुनियादी ढांचे का संयोजन है। यहाँ तक कि अगर कुछ हासिल भी करते हैं तो यह एक बहुत समझदार विचार नहीं होगा। यह आपको अपने बच्चों और पोते-पोतियों से दूर ले जाएगा। ऐसे में जो कोई ऐसा करना चाहता है, वह भारत का मित्र नहीं है। भारत की राजनीतिक और आर्थिक अराजकता तुरंत चीन-पाकिस्तान जैसे देशों को आक्रमण करने के लिए उकसाएगी, क्योंकि वे भारत के साथ हिसाब बराबर करने और भारतीय क्षेत्र को जबरन करने के अवसरों का इंतजार कर रहे हैं। इसलिए जो भी ऐसा करना चाहता है, वह भारत का दोस्त नहीं है। जैसा कि मैंने कहा, केवल लगभग 12 करोड़ लोगों के पास 102 करोड़ से अधिक की संपत्ति है। लेकिन इनमें से लगभग सभी ने अपने व्यवसायों में निवेश किया है। इसलिए, आपको उनकी संपत्ति छीनने के लिए उनके व्यवसायों को समाप्त करना होगा।

ओपन हुए 2 आईपीओ: टीबीओ टेक और आधार हाउसिंग फाइनेंस में 10 मई तक कर सकेंगे निवेश

मुंबई।

2 इनिशियल पब्लिक ऑफर यानी आईपीओ टीबीओ टेक लिमिटेड और आधार हाउसिंग फाइनेंस ओपन हो गए हैं। इसमें 10 मई तक निवेश का मौका है।

टीबीओ टेक लिमिटेड

टीबीओ टेक लिमिटेड इस आईपीओ के जरिए 1,550.81 करोड़ चुटाना चाहती है। इसके लिए कंपनी 400 करोड़ के 4,347,826 फ्रेश शेयर इश्यू करेगी। जबकि, कंपनी के मौजूदा निवेशक 1,550.81 करोड़ के 16,856,623 शेयर ऑफर फॉर सेल के जरिए बेचेंगे। रिटेल निवेशक इस आईपीओ के लिए 8 मई से 10 मई तक बोली लगा सकेंगे। 15 मई को कंपनी के शेयर नेशनल स्टॉक एक्सचेंज और बांबे स्टॉक एक्सचेंज पर लिस्ट होंगे।

मैक्सिमम 208 शेयर के लिए बिडिंग कर सकते हैं रिटेल निवेशक

टीबीओ टेक लिमिटेड ने इस इश्यू का प्राइस बैंड 875-920 तय किया है। रिटेल निवेशक मिनिमम एक लॉट यानी 16 शेयरों के लिए बिडिंग कर सकते हैं। यदि आप आईपीओ के अपर प्राइज



वैंड 920 के हिसाब से 1 लॉट के लिए अपलाय करते हैं, तो इसके लिए 14,720 इन्वेस्ट करने होंगे। वहीं, मैक्सिमम 13 लॉट यानी 208 शेयरों के लिए रिटेल निवेशक अपलाय कर सकते हैं। इसके लिए निवेशकों को अपर प्राइज बैंड के हिसाब से 191,360 इन्वेस्ट करने होंगे।

प्राइस बैंड 920 के हिसाब से इसकी लिस्टिंग 1440 पर हो सकती है। हालांकि, यह केवल अनुमान होता है, शेयर की लिस्टिंग की प्राइस ग्रे मार्केट की प्राइस से काफी अलग होती है।

आधार हाउसिंग फाइनेंस

आधार हाउसिंग फाइनेंस इस आईपीओ के जरिए 3,000 करोड़ चुटाना चाहती है। इसके लिए कंपनी 1,000 करोड़ के 31,746,032 फ्रेश शेयर इश्यू करेगी। कंपनी के मौजूदा निवेशक 2,000 करोड़ के 63,492,063 शेयर ऑफर फॉर सेल के जरिए बेचेंगे।

रिटेल निवेशक इस आईपीओ के लिए 8 मई से 10 मई तक बोली लगा सकेंगे। 15 मई को कंपनी के शेयर नेशनल स्टॉक एक्सचेंज और बांबे स्टॉक एक्सचेंज पर लिस्ट होंगे।

मैक्सिमम 611 शेयर के लिए बिडिंग कर सकते हैं रिटेल निवेशक

आधार हाउसिंग फाइनेंस ने इस इश्यू का प्राइस बैंड 300-315 तय किया है। रिटेल निवेशक मिनिमम एक लॉट यानी 47 शेयरों के लिए बिडिंग कर सकते हैं। यदि आप आईपीओ के अपर प्राइज बैंड 315 के हिसाब से 1 लॉट के लिए अपलाय

करते हैं, तो इसके लिए 14,805 इन्वेस्ट करने होंगे।

वहीं, मैक्सिमम 13 लॉट यानी 611 शेयरों के लिए रिटेल निवेशक अपलाय कर सकते हैं। इसके लिए निवेशकों को अपर प्राइज बैंड के हिसाब से 192,465 इन्वेस्ट करने होंगे।

ग्रे मार्केट में आधार हाउसिंग फाइनेंस का प्रीमियम 19.68 प्रतिशत

आईपीओ ओपन होने के पहले कंपनी का शेयर ग्रे मार्केट में 19.68 प्रतिशत यानी 62 प्रतिशत के प्रीमियम पर पहुंच गया है। ऐसे में अपर प्राइस बैंड 315 के हिसाब से इसकी लिस्टिंग 377 पर हो सकती है। हालांकि यह केवल अनुमान होता है, शेयर की लिस्टिंग की प्राइस ग्रे मार्केट की प्राइस से काफी अलग होती है।

कम आय वाले लोगों को हाउसिंग लोन देती है कंपनी

आधार हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड 2010 में बनी थी। कंपनी कम आय वाले लोगों को हाउसिंग लोन देती है। कंपनी मुख्य रूप से देश के टियर 4 और टियर 5 शहरों में ग्राहकों को सर्विस देती है।

सुझाव

बच्चों को खरटे आने की वजह



बच्चों को खरटे आने की वजह टॉन्सिल्स बढ़े होना, जीभ मोटी होना, जुकाम या हड्डी टेढ़ी होने से नाक में रुकावट।

क्या है लक्षण- तेज आवाज के साथ सांस लेना और छोड़ना। थोड़ी-थोड़ी देर में कुछ सेकेंड के लिए सांस का रुकना। धीरे-धीरे सांस रुकने की रफ्तार और समय बढ़ना। सोते-सोते सांस न आने पर हड़बड़ा कर जानना। पूरा दिन सुस्त और आलस से भरे रहना। नींद पूरी होने पर भी दिनभर नींद आना। थकान महसूस होना।

उपाय- अगर बच्चों के टॉन्सिल्स या गिल्टी बढ़ी हुई हो तो सर्जरी करके बच्चों को स्लीप एग्जिया होने से बचाया जा सकता है। कई बार यूजल को भी काट दिया जाता है ताकि बच्चों को आगे जाकर एग्जिया जैसी बीमारी न हो जाए। नाक की हड्डी बढ़े होने पर 16-17 साल तक उसकी सर्जरी नहीं की जाती। खरटे की समस्या अनुवांशिक नहीं होती।

फैशन- अगर किसी को खरटों की समस्या है और वह सर्जरी करना कर उसे खत्म कर देता है तो इसका यह मतलब नहीं कि अब उसके बच्चों को यह परेशानी नहीं हो सकती। खरटों में फैमिली हिस्ट्री काफी अहम होती है।

टेस्ट- डायनैमिक एमआरआई-यह खरटों के लेवल की जांच के लिए की जाती है। इसमें 1-2 मिनट लगते हैं। इसमें व्यक्ति को सोने के लिए कहा जाता है और तब उसके खरटे, थूक निगलना, सोने का तरीका आदि ऑब्जर्व किया जाता है।

स्लीप स्टडी- यह एक तरह का टेस्ट है, जो व्यक्ति के सोने के बाद उसकी गतिविधियों पर निगाह रखता है। समस्या ज्यादा होने पर यह टेस्ट किया जाता है। इसमें सोते समय श्वस को मशीनों की देखरेख में रखा जाता है। उसे नॉर्मल तरीके से रोज की तरह सोना होता है। इस दौरान मशीनें शरीर की प्रतिक्रिया को नोट करती हैं। स्लीप स्टडी करवाने से पहले व्यक्ति को ऐसी कोई दवा नहीं लेनी होती, जिससे उसे नींद आए। इस टेस्ट के बाद जो नतीजा आता है उसे पॉलीसोमनोग्राफी जाता है। टेस्ट में व्यक्ति के खरटे लेने का तरीका, सोते समय वह कितनी बार उठता है, दिमाग और आंख की गतिविधियां, ब्लड में ऑक्सिजन और कार्बन-डाई-ऑक्साइड का लेवल, दिल की गतिविधि आदि पर गौर किया जाता है। साथ ही, व्यक्ति का स्लीपिंग बिहेवियर जैसे कि सोते समय दांत पीसना, सांस कितनी देर में और कितनी देर के लिए रुकती है जैसी बातें भी ऑब्जर्व की जाती हैं। इस स्टडी के बाद ही इलाज शुरू किया जाता है। मसलन टेस्ट में अगर घंटे भर में सांस 25 बार से ज्यादा रुक रही है तो इसे खतरनाक माना जाता है।

खर्चा 6-7 हजार रुपये तक

स्लीप एग्जिया अगर खरटों का एक पर इलाज न किया जाए तो यह स्लीप एग्जिया नामक बीमारी बन सकती है। स्लीप एग्जिया में सोते समय सांस कुछ सेकेंड के लिए रुक जाती है। ऐसे में रुकावट के बाद तीखी आवाज के साथ सांस आती है, जो उसके पास सो रहे व्यक्ति को डरा देती है। अक्सर लोग इसे भी खरटा ही समझते हैं, जबकि वास्तव में कुछ सेकेंड के लिए सांस रुक जाती है। तो सांस रुकने का समय बढ़ने लगता है और धीरे-धीरे यह खतरनाक स्टेज पर पहुंच जाता है। इसमें व्यक्ति की मौत भी हो सकती है।

घर का डॉक्टर हींग

हींग को हम रोज खाने का स्वाद बढ़ाने के लिए दाल, सब्जियों में डालते हैं। इससे खाना जायकेदार तो बनता ही है साथ ही ये पेट के लिए भी अच्छा रहता है।अपच, पेट दर्द, दांत दर्द, खासी, सर्दी कारण सिरदर्द, आदि के गुणों से भरपूर है। यह रूचिकारक बात-कफ को दूर करने वाली उदर सबधी रोग, पेट की गैस और कमियों को नष्ट करने वाली है।घर की डॉक्टर हींगहींग को पानी में उबालकर उस पानी से कुल्हे करने से दात का दर्द कम होता है।



रंगों और कपड़ों के संयोजन से एक ऐसी पोशाक बनाना जिसको देखकर लोगों के मुह से वाओ शब्द निकल जाये यही असली मायने में फैशन कहलाता है। आज के युग को फैशन का युग कहा जाता है। दुनिया का चक्राचौद में हर कोई फैशन के रंग में रंगा हुआ नजर आता है। फैशन डिजाइनिंग को आम तौर पर कॅरियर का एक आख्यान भर माना जाता है। जबकि ऐसा नहीं है, दरअसल यह एक ऐसी कला है जो ड्रेस और एक्सेसरीज की मदद से किसी इंसान की लाइफ स्टाइल को सामने लाती है।

क्या है फैशन डिजाइनिंग?

मॉडर्न फैशन के अंतर्गत दो विभाग हैं। पहला वर्ग है पोशाकों को डिजाइन करना और दूसरा रेडी-टू-वियर अर्थात् तैयार पोशाकें। इन दोनों वर्गों में फैशन डिजाइनिंग का इस्तेमाल प्रथम वर्ग में किया जाता है। वर्तमान समय में फैशन शो इसी के बूते चल रहे हैं। इन शो के जरिए ही फैशन डिजाइनिंग की सृजनात्मकता और रचनात्मकता का पता चलता है।

अहमियत रंग और बुनावट की

यदि किसी को टेक्सटाइल, पैटर्न, कलर कोडिंग, टेक्सचर आदि का अच्छा ज्ञान हो तो फैशन डिजाइनिंग को कॅरियर के रूप में अपनाने में उसे बिल्कुल हिचकना नहीं चाहिए, उसकी सफलता को कोई गुंजाइश नहीं रह जाती और उसका नाम फैशन इंडस्ट्री में तहलका मचा सकता है। खासकर भारत जैसे देश में जहाँ के फैशन में पश्चिमी सभ्यता का भी संगम है, और इसी मिलन ने फैशन इंडस्ट्री को एक नयी दिशा और पहचान दी है। फॅशन डिजाइनिंग में रंगों के संयोजन और कपड़े के आधार पर उसकी बुनाई



करियर का अच्छा मौका है फैशन

का बड़ा महत्व है। एक तरह से ये ही फैशन डिजाइनिंग का सार है। इन की बिनाह घर ही लुक्स संभव हो सकते हैं। इसके बाद व्यावसायिक कुशलता, कट, डिजाइन, सहायक सामग्री मिलकर ही पोशाक का मूल स्वरूप तय कर सकते हैं।



मौसम के साथ बदलता है फैशन का भी

मिजाज यह भी जरूरी है की इसे पूरी विधि के साथ संपूर्ण किया जाए। प्लान तैयार करके, ब्लू प्रिंटर से प्रिंट करने के बाद ही फाइनेल आउटकम प्राप्त होगा। डिजाइन की सफलता स्वाभाविक रूप से उसकी फिनिशिंग फैशन डिजाइनिंग का सबसे महत्वपूर्ण पहलू ये है कि फैशन किसी ना किसी थीम पर निर्भर करता है, जैसे-मौसम, लोगों की पसंद विशेष आदि. अगर आपन गौर किया हो तो फैशन प्रमुखतः- मौसम के अनुसार होता है. उदाहरण के लिए सर्दी के मौसम में आपको उसी के अनुरूप रंग और फैब्रिक देखने को मिलेगा। इसके साथ ही ऊनी कपड़े, पोली नैक, नीले और ब्राउन देखने को मिलेंगे. इसके विपरीत गर्मियों में आपको कैनजुआन, कॉटन और साफे रंग मिलेंगे।



क्या है इन और क्या है आउट

फैशन कभी भी स्थायी नहीं होता है.समय के साथ इसमें परिवर्तन होते रहते हैं। वर्तमान ने स्पोर्टी का फैशन गया और हॉल्टर नेक्स चल रहे हैं। स्कर्ट चलन में है और पैटयूट्स का दौरा जा चुका है। इसीलिए परिवर्तन की गति को देखते हुए, इस फील्ड में आने वाले हर इंसान को चौकन्ना रहना होगा। और इस बात के लिए कि क्या पहना जाना चाहिए और क्या नहीं? फैशन का प्रमुख केंद्र सोलिविटीज, सोशलमिडिया, मॉडलिंग आदि रहे हैं।

ग्लैमर कम नहीं

कुल मिलाकर फैशन डिजाइनिंग बहुत ही चुनौती भरा और ग्लैमर से भरपूर भरा व्यवसाय है, जिसमें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजन होते हैं. जैसे- आईएमजी फैशन वीक, लक्मे फैशन वीक आदि। बहुत से फैशन डिजाइनिंग इन्स्टीट्यूट जैसे- नॅशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन, अहमदाबाद, नॅशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नालॉजी, सांफिया पॉलि टेक्निक आदि।

रेड बर्थमार्क के कारण निदान और इलाज



बर्थमार्क्स यानी जन्मजात निशान त्वचा पर मौजूद बदरंग निशान होते हैं। कई नवजात शिशुओं में लाल अथवा कुछ अन्य प्रकार के निशान होते हैं। आमतौर पर ये निशान जन्म के कुछ सप्ताहों के भीतर ही नजर आ जाते हैं। ये निशान त्वचा के करीब मौजूद रक्त वाहिनियों द्वारा बनते हैं। इन निशानों के बनने की बड़ी वजह त्वचा में पिग्मेंटेशन के कारण रक्तवाहिनियों का अधिक निर्माण होता है।

कारण

आमतौर पर इन निशानों का मुख्य कारण किसी को नहीं पता। और साथ ही इन निशानों को होने से रोकने के लिए ही कुछ किया जा सकता है। बर्थमार्क्स के कारणों के बारे में भले ही अधिक जानकारी न हो, लेकिन इतना तो साफ है कि वाहिकीय समस्याओं से होने वाले बर्थमार्क्स अनुवांशिक नहीं होते। जानकार मानते हैं कि इसके पीछे त्वचा कोशिकाओं को प्रभावित करने वाले स्थानिक कारण अधिक उत्तरदायी होते हैं। के कारण भी हो सकता है।

पोर्ट वाइन स्ट्रेन

इन निशानों की मुख्य वजह रक्तवाहिनियों की चौड़ाई निर्धारित करने वाली प्रक्रिया में असंतुलन का होना है। परिणामस्वरूप, इस क्षेत्र में निरंतर प्रवाहित होने वाला रक्त लाल अथवा बैंगनी हो जाता है। पोर्ट वाइन स्ट्रेन इसके अलावा स्ट्रग-वेबर-सिंड्रोम और क्लिपल ट्रेनायूने सिंड्रोम के कारण भी हो सकता है।

निदान

रेड बर्थमार्क्स के निदान की प्रक्रिया इस बात पर निर्भर करती है कि आखिर ये निशान नजर कैसे आते हैं। डॉक्टर इनका इलाज करने से पहले इनको अच्छी तरह जांच करते हैं। बर्थमार्क्स की गहरी जांच करने के लिए डॉक्टर बायोप्सी, सीटी स्कैन और एमआरआई भी करने की सलाह दे सकता है।

इलाज

- अधिकतर बर्थमार्क्सकिसी प्रकार की परेशानी खड़ी नहीं करते और उन्हें किसी इलाज की जरूरत नहीं होती। हालांकि, कुछ रेड बर्थमार्क्स बच्चे को थोड़ा बढ़े होने के साथ ही गायब भी हो जाते हैं। बहुत कम निशान ही रक्तवाहिनियों के ट्यूमर में परिवर्तित हो सकते हैं। इन्हें हेमैन्गीओमा कहा जाता है। कुछ निशान ऐसे भी होते हैं, जो ठीक नहीं होते और स्थायी रूप से साथ रहते हैं।
- हेमैन्गीओमा को इलाज करवाने की जरूरत तब पड़ती है, जब इनका असर आपके लुक पर पड़ता हो। इसके साथ ही अगर इससे आपको भावनात्मक तनाव अथवा दर्द होता हो, तो भी आपको इसका इलाज करवाना चाहिये। इतना ही नहीं अगर हेमैन्गीओमा के आकार, स्वरूप अथवा रंग में किसी प्रकार के बदलाव का आभास होने पर भी इलाज करवाया जाना चाहिये। हेमैन्गीओमास यदि बच्चे की आंख के करीब हो, तो उसका इलाज जरूर करवाना चाहिये, क्योंकि इसका असर उसके देखने की क्षमता पर पड़ सकता है।
- बर्थमार्क्स के आकार पर निर्भर करता है कि इसके इलाज में किस प्रकार की इलाज पद्धति को अपनाया जाए। इसके लिए लेजर ट्रीटमेंट से लेकर कॉस्मेटिक के अन्य तरीके भी आजमाये जा सकते हैं। इसके अलावा बर्थमार्क्स के निशान को छेदा करने का लिए दवाओं अथवा इंजेक्शन का भी प्रयोग किया जा सकता है।
- बहुत ही दुर्लभ मामलों में बर्थमार्क्स का संबंध किसी अन्य बीमारी से होता है।

ऐसे लाएं फेंगशुई बटरफ्लाई से रिशतों में सुधार

हम सभी की जिंदगी में ऐसा वक्त आता है, जब कुछ भी ठीक नहीं होता. सब कुछ-उलट-पलट हो जाता है. हम किसी भी चीज पर ध्यान नहीं दे पाते और इसका सबसे सीधा असर हमारे रिश्ते पर पड़ता है. क्योंकि ये समय और प्यार मांगता है.

वैसे तो रिश्ते सुधारने के लिए पहले आपको खुद करनी होगी और अपनी बातों से और अपने व्यवहार से सामने वाले के दिल में परिवर्तन लाना होगा, लेकिन इसके साथ ही लव लाइफ को बेहतर बनाने के लिए फेंगशुई का एक उपाय और कर लें, तो यह और भी आसान हो जाता है.

सबसे बड़ी बात यह कि इसके लिए आपको बहुत ज्यादा मशकत करने की जरूरत भी नहीं है. आपको अपने घर में बस एक खास चीज रखनी की जरूरत है और वो है, फेंगशुई बटरफ्लाई.



» प्रेम का भाव बढ़ाने के लिए बेडरूम में फेंगशुई बटरफ्लाई का इस्तेमाल कर सकते हैं. ये नीले रंग के पत्थर के बने होते हैं और प्यार

का प्रतीक होते हैं. अगर लव लाइफ को बेहतर बनाने के लिए इस्तेमाल करना है तो एक की बजाय इस तरह की दो तितलियों को रखें

और फिर देखिए किस तरह आपके रिश्ते में मिठास घुल जाती है.

» असल में तितली को उन्मुक्त उड़ान का प्रतीक माना जाता है, इसलिए यह रचनात्मकता पर भी सकारात्मक असर डालती है. इसे बच्चों के स्टडी रूम में रख सकते हैं. स्टडी टेबल के सामने वाली दीवार पर इसे टांग सकते हैं. आप इसे चित्र, पोस्टर या पेंटिंग के रूप में भी आजमा सकते हैं.

» इसे गैजेट या ज्वेलरी के रूप में भी शरीर पर धारण किया जा सकता है. पेंडेंट के रूप में तितलियां आकर्षक लुक देंगी. इसे अपने पास की-चैन के रूप में भी रख सकते हैं.

» इसे घर में ऐसे स्थान पर लगाया जाना चाहिए, जहां से यह स्पष्ट रूप से नजर आए इसलिए दरवाजे के पीछे इसे कभी नहीं लगाएं.

जली हुई प्रैस से लेकर बदबू को भी दूर करता है नमक



खाने की हर चीज में नमक का इस्तेमाल किया जाता है। इसके बिना खाने का स्वाद नहीं आता और शरीर में नमक की कमी हो जाने से नुकसान भी होता है। इन सब के अलावा नमक को घर की साफ-सफाई के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है। आइए जानिए नमक के ऐसे ही कुछ जबरदस्त फायदों के बारे में जिनके बारे में शायद ही कोई जानता होगा।

1. जली हुई प्रैस

कपड़े प्रैस करते वक्त कई बार वह जल जाते हैं और कपड़े का टुकड़ा आयरन पर चिपक जाता है। जिसे साफ करना मुश्किल होता है और इस प्रैस को जब दूसरे कपड़ों पर इस्तेमाल करते हैं तो वह खराब हो जाते हैं। ऐसे में आयरन को साफ करने के लिए नमक का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए एक



खाना पकाते समय या घी को गर्म करते वक्त बर्तन कई बार पूरी तरह जल जाता है जो आसानी से साफ नहीं होता। ऐसे में उस बर्तन में 1 कप नमक डालें और उसमें पानी डालकर 10 मिनट तक उबलने के लिए गैस पर रख दें। इससे बर्तन के दाग आसानी से निकल

जाएंगे।

3. हाथों की दुर्गंध

प्याज, लहसुन काटते या मांस-मछली बनाने के बाद हाथों में से गंदी दुर्गंध आने लगती है। इसे दूर करने के लिए हाथों पर थोड़ा-सा नमक डालें और अच्छी तरह मलें। फिर पानी से हाथों को साफ करें जिससे बदबू दूर हो जाएगी।

4. चाय की केतली

केतली में चाय या कॉफी रखने के बाद अगर उसे उसी समय साफ न किया जाए तो उसमें दाग रह जाते हैं। ऐसे में केतली में कुछ आइस क्यूब, 1 कप नमक और थोड़ा पानी डालकर अच्छे से हिलाएं जिससे चाय-कॉफी के सूखे हुए दाग साफ हो जाएंगे।

5. तेल की छींटे

गर्म तेल में कुछ भी फ्राई करते समय उसमें से छींटे बाहर आने लगती हैं जिससे हाथ जलने का खतरा रहता है। ऐसे में तेल में पहले थोड़ा सा नमक डालें और उसके बाद तलने के लिए कुछ और डालें।

रेसिपी



विधि

घीमी आंच में एक पैन में दूध डालकर उबाल लें। पहला उबाल आते ही दूध में उबला और कदकूस किया हुआ शकरकंद डालें और अच्छी तरह से मिवस कर लें। दूध के गाढ़ा होने तक इसे कड़की से हल्के हल्के चलाते रहें। अब कैसर पाउडर और इलायची पाउडर दूध में डालें और 3 से 4 मिनट तक पकाएं। तय समय के बाद आंच बंद कर दें और रबड़ी को एक बॉउल में निकल लें और फिर आंच घटे के लिए फ्रिज में ठंडा होने रख दें। तैयार रबड़ी को बारीक कटें काजू और बादाम से गार्निश कर सर्व करें।

शकरकंद की रबड़ी

सामग्री

3 कप दूध, आधी कटोरी उबला और कदकूस किया हुआ शकरकंद, 1 चम्मच चीनी बूरा, 1 कप गमनी, 1 चम्मच इलायची पाउडर, एक चुटकी कैसर पाउडर, सजावट के लिए, 1 बड़ा चम्मच बारीक कटें काजू और बादाम

मेथी दाना आचार

सामग्री

मेथी के दाने 50 ग्राम, सरसों का तेल 2-3 टेबल स्पून, नींबू 250 ग्राम, हींग जरा सी, काली मिर्च आधा छोटा चम्मच दरदरी पिसी, सोंफ 1 छोटा चम्मच दरदरी पिसी, हल्दी पाउडर आधा छोटा चम्मच, लाल मिर्च पाउडर आधा छोटा चम्मच, नमक स्वादानुसार।



विधि

मेथी के दानों को अच्छी तरह साफ करें। पैन में तेल डालकर गरम करें और गैस एकदम धीमी कर दीजिये और तेल को अब मीडियम गरम रहने तक ठंडा कर लीजिये। गरम तेल में मेथी के दाने डालकर लगातार चलाते हुये मेथी के दाने का हल्का सा कलर चेन्ज होने तक भून लीजिये। गैस बन्द कर दीजिये और मेथी दाने में हींग पाउडर, काली मिर्च, सोंफ, हल्दी पाउडर, लालमिर्च पाउडर और नमक डालकर अच्छी तरह मिला दीजिये और अब इन्हें प्याले में निकाल लीजिये। नींबू को काट कर किसी प्याले में रस निकाल लीजिये और आचार में नींबू का रस डालकर मिला दीजिये। दाना मेथी का आचार तैयार है लेकिन आचार खाने के लिये 3 दिन बाद तैयार होगा जब तक मेथी के दाने नींबू के रस में फूल जायेंगे और सारे मसाले एक्जॉर्ब कर लेंगे।